Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 26 अंक 5 30 मई, 2026 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

नशा मुक्त भविष्य का मिलकर निर्माण

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

नशा वृत्ति क्या है ?

चिकित्सीय भाषा में जब किसी रासायनिक पदार्थ, दर्द निवारक दवाओं (Painkillers), या प्रतिबंधित नशीले पदार्थों का सेवन डॉक्टर की सलाह के बिना, केवल मानसिक आनंद, मतिभ्रम (Hallucination) या किसी भी प्रकार के नशे के लिए किया जाता है, तो उसे 'ड्रग एब्यूज' कहा जाता है। शुरुआत में यह केवल एक बार के कौतूहल या मजे के लिए शुरू होता है, लेकिन धीरे–धीरे यह शरीर और मस्तिष्क की रासायनिक संरचना को बदल देता है। इसके बाद यह शौक 'लत' (Addiction) में बदल जाता है। यह एक ऐसी मानसिक और शारीरिक निर्भरता है, जहां व्यक्ति का खुद के दिमाग और इच्छाशक्ति पर कोई नियंत्रण नहीं रहता।

'नशे का जो हुआ शिकार, उजड़ गया उसका संसार।'

यह समस्या अब सिर्फ किसी एक व्यक्ति या परिवार की नहीं, बल्कि एक गंभीर सामाजिक और राष्ट्रीय संकट का रूप ले चुकी है। 'नशीली दवाओं का दुरुपयोग' एक ऐसी धीमी मौत है, जो न केवल इसका सेवन करने वाले व्यक्ति को खत्म करती है, बल्कि उसके हंसते–खेलते परिवार और पूरे समाज की नींव को हिलाकर रख देती है। आज दुनिया का हर देश, चाहे वह अमीर हो या गरीब, इस वैश्विक महामारी की चपेट में है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि किसी भी देश का भविष्य कही जाने वाली 'युवा पीढ़ी' इसका सबसे आसान शिकार बन रही है।

सरहद से मुख्य भूमि तक : देश–विदेश में पैर पसारता नशीले पदार्थों का काला कारोबार नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) की लेटेस्ट रिपोर्ट के मुताबिक, 2024 में पंजाब में कम से कम 106 लोगों की मौत कथित ड्रग ओवरडोज से हुई, जो हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ में दर्ज इसी तरह की मौतों से कहीं ज्यादा है। केंद्रीय गृह मंत्रालय (MHA) की जारी रिपोर्ट के मुताबिक, 2024 में हिमाचल प्रदेश में ऐसी 31 मौतें हुईं, हरियाणा में तीन और चंडीगढ़ में सात। देश भर में, पंजाब में ऐसे मामलों की संख्या तमिलनाडु के बाद दूसरे नंबर पर रही, जहाँ ड्रग ओवरडोज से 313 लोगों की मौत हुई। पंजाब के बाद मध्य प्रदेश (90), राजस्थान (69) और मिजोरम (65) का नंबर रहा। 2024 में देश भर में ड्रग से होने वाली कुल 978 मौतें रिपोर्ट हुई, जो 2023 में 654 थीं।

पंजाब में ड्रग से होने वाली मौतों की संख्या 2023 में 89 से बढ़कर 2024 में 106 हो गई है। 2023 में, पंजाब में ड्रग ओवरडोज से होने वाली मौतों की सबसे ज्यादा संख्या दर्ज की गई थी, जबकि तमिलनाडु दूसरे स्थान पर था। एक सर्वेक्षण के अनुसार पंजाब में प्रति लाख आबादी पर 29 NDPS एक्ट के मामले दर्ज किए गए, जो केरल के बाद दूसरे स्थान पर है, जहाँ प्रति लाख आबादी पर 75.5 मामले हैं। लेकिन, पंजाब की तुलना में, पड़ोसी हरियाणा (10.8), हिमाचल प्रदेश (22.8) और चंडीगढ़ (7.2) में ड्रग अपराधों के लिए क्राइम रेट कम है। ड्रग अपराधों के तहत पंजाब का क्राइम रेट 7.8 के राष्ट्रीय औसत से कहीं ज्यादा है।

आज नशीले पदार्थों का सेवन एक राष्ट्रीय समस्या न होकर एक गंभीर विश्वव्यापक समस्या बन चुकी है। संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय (UNODC) कि रिपोर्ट के के अनुसार अमेरिका में सिंथेटिक ओपिओइड (फेन्टानिल) और कोकीन का इस्तेमाल करने की दर 7.2% है जो कि 18–25 वर्ष की युवा पीढ़ी द्वारा किया जात है और ऑस्ट्रेलिया में मेथामफेटामाइन (आइस) इस्तेमाल करने की दर 26–34 वर्ष के नौजवानों में 4.8% है। इसके साथ ही यूनाइटेड किंगडम में पाउडर कोकीन और हेरोइन 16–24 वर्ष के नौजवानों में इस्तेमाल करने की दर 4.3% एवमं रूस में डेसोमॉर्फिन (क्रोकोडिल) और हेरोइन का इस्तेमाल करने की दर 25–39 वर्ष के वयस्कों में 3.9% है। कनाडा में अवैध फेन्टानिल और मेथामफेटामाइन का इस्तेमाल करने की दर 20–24 वर्ष के युवाओं में 3.5% है।

वैश्विक ड्रग मार्केट में सिंथेटिक (कृत्रिम) नशों का बढ़ता वर्चस्व है। अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नशीले पदार्थों का प्राथमिक खतरा अफीम या गांजे जैसे पारंपरिक पौधों पर आधारित नशों से हटकर अत्यधिक जानलेवा रासायनिक और सिंथेटिक दवाओं की ओर बढ़ गया है। वर्तमान में अमेरिका और कनाडा में 'फेंटानिल' (Fentanyl) तथा ऑस्ट्रेलिया में 'मेथामफेटामाइन' (Methamphetamine) जैसी सिंथेटिक दवाएं तबाही मचा रही हैं। ये रसायन न केवल लत को तेजी से बढ़ाते हैं, बल्कि इनकी जरा सी ओवरडोज के कारण दुनिया भर में अभूतपूर्व रूप से मृत्यु दर (Mortality Ratee) में रिकॉर्ड वृद्धि हो रही है।

समाज में गहराता पीढ़ियों का अंतर (Generational Divide) है। आंकड़ों के मुताबिक, दुनिया भर में बुजुर्ग आबादी (60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग) में कड़े नशीले पदार्थों के सेवन का प्रसार लगातार

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

सबसे कम, यानी 0.3% से भी नीचे दर्ज किया गया है। इसके विपरीत, स्कूली बच्चों, किशोरों और युवाओं में बढ़ता ग्राफ यह साफ संकेत देता है कि अंतरराष्ट्रीय ड्रग सिंडिकेट और वैश्विक तस्करी नेटवर्क जानबूझकर अपनी रणनीतियों के तहत नई पीढ़ी को निशाना बना रहे हैं। यदि समय रहते वैश्विक स्तर पर कड़े कदम नहीं उठाए गए, तो यह संकट आने वाले समय में मानव संसाधन को पूरी तरह तबाह कर सकता है।

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि आज नशावृत्ति की समस्या एक राष्ट्रीय समस्या न होकर अंतर्राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। नशे की लत, विशेषकर युवा वर्ग में एक गंभीर स्तर तक पनप चुकी है जिसका समय रहते निवारण करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि किसी भी राष्ट्र व समाज की सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था के लिये उसके मैनपावर की शारीरिक व मानसिक स्थिति सुदृढ़ होनी अति आवश्यक है।

मुख्य कारण

कोई भी व्यक्ति जन्म से नशेड़ी नहीं होता। इसके पीछे कई सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय कारण जिम्मेदार होते हैं :

आधुनिक जीवनशैली और मानसिक तनाव : आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में प्रतियोगिता बहुत बढ़ गई है। पढ़ाई का बोझ, करियर की चिंता, नौकरी का दबाव और टूटते बिखरते रिश्तों के कारण युवा डिप्रेशन और एंग्जायटी का शिकार हो रहे हैं। इस मानसिक दर्द से थोड़ी राहत पाने के लिए वे ड्रग्स का सहारा लेते हैं।

सहपाठियों और दोस्तों का दबाव (**Peer Pressure**): किशोरों और युवाओं में अपने दोस्तों के बीच "कूल" या आधुनिक दिखने की एक अंधी होड़ होती है। दोस्तों के उकसावे पर वे सिर्फ एक बार आजमाने के चक्कर में इस दलदल में पैर रख देते हैं।

पारिवारिक माहौल और अकेलेपन का शिकार : जिन परिवारों में माता–पिता के बीच लगातार झगड़े होते हैं या जो माता–पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय और भावनात्मक सहारा नहीं दे पाते, वहां बच्चे अक्सर अकेलेपन और उपेक्षा का शिकार होकर नशे की शरण में चले जाते हैं।

फार्मास्युटिकल ड्रग्स का दुरुपयोग: कई बार लोग किसी बीमारी या दर्द के लिए डॉक्टरों द्वारा लिखी गई दवाइयों (जैसे नींद की गोलियां या कफ सिरप) का जरूरत से ज्यादा और नशे के तौर पर इस्तेमाल करने लगते हैं।

नशीले पदार्थों की आसान उपलब्धता: आज के समय में कानून की सख्ती के बावजूद ड्रग पेडलर्स (तस्करों) का नेटवर्क इतना मजबूत हो चुका है कि स्कूल–कॉलेजों के आस–पास भी नशीले पदार्थ बेहद आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। डार्क वेब और सोशल मीडिया ने भी इस अवैध धंधे को बढ़ावा दिया है।

हमारे देश में नशीले पदार्थों की तस्करी सबसे ज्यादा पंजाब बॉर्डर के रास्ते होती है, जहाँ अब ड्रग्स पहुँचाने के लिए बड़े पैमाने पर ड्रोन्स (Drones) का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके अलावा, हमारे देश में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पड़ोसी देशों जैसे पाकिस्तान और अफगानिस्तान की सीमाओं तथा गुजरात के जामनगर व अन्य प्रमुख बंदरगाहों का उपयोग भी नशा तस्करी के लिए किए जाने की खबरें लगातार आती रहती हैं। साफ तौर पर, इस प्रकार विरोधी देश हमारी आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और आंतरिक सुरक्षा में भीतरघात करने पर लगातार उतारू रहते हैं।

बहुआयामी दुष्प्रभाव

शरीर से लेकर समाज तकनशीली दवाओं का असर सिर्फ उस व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, यह चौतरफा तबाही मचाता है:

शारीरिक स्वास्थ्य का विनाश: लगातार ड्रग्स के सेवन से मानव शरीर के मुख्य अंग जैसे लिवर, किडनी, फेफड़े और हृदय पूरी तरह डैमेज हो जाते हैं। इसके अलावा, एक ही सुई (Syringe) को कई लोगों द्वारा इस्तेमाल करने से एचआईवी/एड्स और हेपेटाइटिस बी व सी जैसी जानलेवा बीमारियां तेजी से फैलती हैं।

मानसिक और मनोवैज्ञानिक पतन: नशा व्यक्ति के सोचने–समझने की क्षमता को नष्ट कर देता है। पीड़ित व्यक्ति गंभीर अवसाद, पैरानॉयड (शक करने की बीमारी), मतिभ्रम और हिंसक व्यवहार का शिकार हो जाता है। कई मामलों में यह मानसिक संतुलन पूरी तरह खो देने या आत्महत्या का कारण बनता है।

आर्थिक बर्बादी: ड्रग्स कोई सस्ती चीज नहीं है। इसकी लत इतनी तगड़ी होती है कि व्यक्ति अपनी सारी जमा–पूंजी, जमीन–जायदाद और यहां तक कि घर के बर्तन तक बेच देता है। पूरा परिवार कर्ज के जाल में डूब जाता है।

बढ़ते सामाजिक अपराध: जब नशेड़ी व्यक्ति के पास ड्रग्स

खरीदने के पैसे खत्म हो जाते हैं, तो उसकी छटपटाहट उसे अपराध की ओर धकेलती है। समाज में चोरी, डकैती, चेन स्नैचिंग, घरेलू हिंसा और यहां तक कि मर्डर जैसे जघन्य अपराधों के पीछे एक बहुत बड़ा कारण नशे की लत होती

'जिंदगी से नाता जोड़ें, नशे की आदत छोड़ें।'

समाधान के सुझाव

इस समस्या का समाधान केवल कानून के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। इसके लिए एक बहुस्तरीय और सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

आज नशीले पदार्थों का बढ़ता जाल पूरे विश्व को भीतर से खोखला करता जा रहा है। लेकिन दुनिया में कुछ देश ऐसे भी हैं, जिन्होंने अपने दृढ़ निश्चय और कड़े अनुशासन के बल पर इस गंभीर समस्या से पूरी तरह निजात पा ली है। इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है, आज से लगभग चार–पाँच दशक पूर्व तक चीन (China) को 'अफीमची देश' कहकर ताने मारे जाते थे। परंतु, अपने बेमिसाल अनुशासन और संकल्प के दम पर उसने पूरे देश को नशामुक्त बनाया। इसी का परिणाम है कि आज चीन की गिनती विश्व के सबसे विकसित देशों में होती है, और वह सुरक्षा तथा अर्थव्यवस्था दोनों ही मामलों में दुनिया में दूसरे नंबर पर गिना जाता है।

स्कूली स्तर पर अनिवार्य शिक्षा व काउंसलिंग: शिक्षा संस्थानों में केवल किताबी ज्ञान न देकर, प्राथमिक स्तर से ही बच्चों को ड्रग्स के शारीरिक और सामाजिक दुष्प्रभावों के बारे में दृश्य–श्रव्य (Audio & Visual) माध्यमों से जागरूक किया जाना चाहिए। स्कूलों में पेशेवर काउंसलर होने चाहिए जो बच्चों के मानसिक तनाव को समय पर पहचान सकें।

पुनर्वास केंद्रों (**Rehabilitation Centers**) का सुदृढ़ीकरण: समाज को अपना नजरिया बदलना होगा। ड्रग्स के आदी व्यक्ति को 'अपराधी' नहीं बल्कि एक 'मरीज' की तरह देखा जाना चाहिए। देश में उन्नत और सुलभ नशामुक्ति केंद्र होने चाहिए जहां मरीजों का इलाज बिना किसी प्रताड़ना के, मनोवैज्ञानिक थेरेपी और सहानुभूति के साथ किया जाए।

माता–पिता की सक्रिय भूमिका: माता–पिता को अपने बच्चों के बदलते व्यवहार (जैसे अचानक चिड़चिड़ा होना, अकेले कमरे में बंद रहना, भूख न लगना, पढ़ाई में नंबर कम आना) पर नजर रखनी चाहिए। बच्चों के साथ एक दोस्ताना और पारदर्शी माहौल बनाएं ताकि वे अपनी हर समस्या बिना डरे साझा कर सकें।

कड़े कानून और खुफिया तंत्र की मजबूती: सरकार को नशीले पदार्थों के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क और सीमा पार से होने वाली तस्करी को तोड़ने के लिए अपने खुफिया और सुरक्षा तंत्र को अत्यधिक आधुनिक बनाना होगा। नशीली दवाएं बेचने वालों के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट के जरिए सख्त से सख्त सजा का प्रावधान होना चाहिए।

नशीली दवाओं का दुरुपयोग एक ऐसा दीमक है जो हमारे समाज की जीवंतता को अंदर ही अंदर चाट रहा है। कोई भी देश तब तक महाशक्ति या विकसित नहीं बन सकता जब तक उसकी युवा ऊर्जा नशे के धुएं में उड़ रही हो। इस समस्या को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए 'कड़े कानून की शक्ति', 'चिकित्सा का विज्ञान' और 'परिवार के प्यार व समर्थन' का एक साथ आना बेहद जरूरी है। पंजाब में लिट फाउंडेशन के तहत शुरू किया गया 'मर्दस अगेंस्ट ड्रग्स' अभियान' की शुरूआत इस गंभीर समस्या के विरूद्ध एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि माताएं नशे के खिलाफ रक्षा की पहली पंक्ति होती हैं जोकि घर व विशेषकर बच्चों को संस्कार देने में घर की मुख्यमंत्री की तरह काम करती हैं। आज इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए 'पंजाब लिट फाउंडेशन' की तर्ज पर सभी समाज सेवी व स्वयं सेवक संस्थाओं को मंथन कर युवा वर्ग तथा समस्त मानव जाति को इस गंभीर समस्या के दुष्परिणामों से जागरूक करवाने की आवश्यकता है।

अतः 'नशा मुक्त भविष्य का मिलकर निर्माण' केवल एक नारा नहीं, बल्कि समय की सबसे बड़ी मांग है। इस भीतरघात का जवाब देने के लिए न्यायपालिका, पुलिस प्रशासन, नारकोटिक्स ब्यूरो, मंत्रालयों के प्रशासनिक नेतृत्व, लेखकों की कलम, हमारे विश्वविद्यालयों की शिक्षा और हमारे सामाजिक संस्थानों व सामाजिक कार्यकर्ताओं के निरंतर प्रयासों को एक साथ मिलकर एक अभेद्य दीवार की तरह खड़ा होना होगा। आइए, आज इस मंच से हम सब यह संकल्प लें कि हम अपने सामूहिक प्रयासों, कड़े अनुशासन और दृढ़ निश्चय से भारत को इस महामारी से मुक्त कराएंगे और एक सशक्त व नशामुक्त स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करेंगे।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

माना दुनिया बुरी है, सब जगह धोखा है। किंतु हम तो अच्छे बने, हमें किसने रोका है।।

1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

– डा. राजेन्द्र कमार, (मो० 9897821175)

1857 का विद्रोह, जिसे प्रथम स्वतंत्रता संग्राम होने का गौरव प्राप्त है, भारत के इतिहास की प्रमुख घटना है। यह उस साम्राज्य के विरुद्ध किया गया सबसे बड़ा संघर्ष था जिसके बारे में कहा जाता था कि उसमें कभी सूर्य अस्त नहीं होता। बताया जाता है कि उपनिवेशवाद से मुक्ति के इस महान संघर्ष में राजे नवाब, अमीर–गरीब, किसान–मजदूर और कारीगर पहली बार मिल कर लड़े थे। परन्तु, 9 मई 1857 को मेरठ में जिन 85 सिपाहियों का कोर्टमार्शल किया गया, उनमें अनेक जाट थे। उस समय तक वर्तमान हरियाणा का बड़ा इलाका उत्तर–पश्चिम प्रान्तों में शामिल था जिसका मुख्यालय आगरा था और दिल्ली भी उसी का एक हिस्सा थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इन्हीं प्रान्तों के जाट समुदाय के हजारों लोगों ने ब्रिटिश अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और अपना खून बहाया। उन्होंने स्थानीय विद्रोहों में प्रमुख भूमिका निभाई और इस प्रकार मातृभूमि को विदेशी चंगुल से मुक्त कराने के लिए औपनिवेशिक सेनाओं के विरुद्ध निर्णायक युद्ध छेड़ दिया। अपने स्वभाव के कारण देश को आजाद कराने के प्रयत्न में वे पीछे नहीं हटे, ब्रिटिश शक्ति के सामने जोर–शोर से, बल्कि नष्ट होने तक, डटे रहे, अड़े रहे।

1857 को सिपाहियों द्वारा आरम्भ किया गया विद्रोह माना जाता है, पर यह सिर्फ सिपाही विद्रोह नहीं था। बल्कि यह विद्रोह जो मुख्यतः उत्तर–पश्चिमी प्रदेशों के जाट बहुल क्षेत्रों में फैला था, वह किसान समुदायों का एक असंगठित विद्रोह था, और इसके मूल में न तो कारतूसों में लगी चर्बी थी, न धार्मिक पूर्वाग्रह या हिन्दू रीति–रिवाजों में ब्रिटिश हस्तक्षेप था, बल्कि यह अंग्रेजों, उनके देसी अमले और उनके द्वारा संरक्षित साहूकारों, अनाज व्यापारियों, नये बने जमींदारों द्वारा किया गया किसानों का आर्थिक और सामाजिक शोषण था, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इन्हीं प्रान्तों के किसान समुदाय के हजारों लोगों ने ब्रिटिश अत्याचारों के खिलाफ लडाई लड़ी और अपना खून बहाया।

वास्तव में, उत्तर पश्चिम भारत में भूमि के स्वामित्व का तरीका जटिल था। बिना ठीक से समझे, राजस्व से अधिक आय प्राप्त करने के लालच में अंग्रेजों ने इसमें एक और जटिलता जोड़ दी क्योंकि वे यूरोप की तर्ज पर यह मानते थे कि भूमि का स्वामी राजा होता है। जबकि भारत में ऐसा नहीं था।

भूमि पर निजी सम्पत्ति अधिकार, जो अब तक भारतीय समाज में अनुपस्थित था, सत्ता पर कब्जा करने के बाद अंग्रेजों द्वारा शुरू की गयी सबसे खतरनाक साजिश थी। इस अधिकार से तात्पर्य भूमि को निजी सम्पत्ति स्वीकार करते हुए उसे बिक्री या बंधन द्वारा स्वतंत्र रूप से हस्तांतरणीय बनाना था, जबकि भारत में ऐसा नहीं था। अधिकांश विद्वान इस मत से सहमत हैं कि अंग्रेजों से पहले, किसानों के पास भूमि पर स्थायी और विरासत में मिलने वाले कब्जे के अधिकार थे, जिन्हें हस्तांतरित नहीं किया जा सकता था और राजा से उन्हें बेदखल करने की अपेक्षा नहीं की जाती थी, क्योंकि किसान ही उसका मालिक था। राजा सुरक्षा और सहायता के लिए उनसे कर के रूप में उपज एक भाग ले सकता था। मुस्लिम शासकों के काल में भी इसमें परिवर्तन नहीं हुआ, बस कर की दर बढ़ा दी जाती रही। जब तक किसान खेती करता था, तब तक उसे भूमि के प्रयोग का अधिकार था। दूसरे शब्दों में भूमि का स्वामित्व ग्राम समुदाय पर आधारित था और भूमि पर निजी अधिकार की कोई अवधारणा नहीं थी। वैदिक धर्मशास्त्र विशेषज्ञ गौतम के अनुसार, कोई भी सम्पत्ति, जो जीविका का साधन थी, उसका बंटवारा नहीं किया जा सकता था, न उसे बेचा जा सकता था। भूमि जीविका का ही साधन थी।

अंग्रेजों द्वारा बनाया गया भूमि में निजी सम्पत्ति का नया कानून यद्यपि भूमि में नहीं, उससे राजस्व वसूलने के अधिकार में निहित था। इसमें कहा गया कि जब कोई भूमिधारक राज्य को अपने बकाया राजस्व का भुगतान करने में चूक करता हो, तो एक स्वचालित कानूनी प्रक्रिया द्वारा उसकी जोत को जब्त कर लेना चाहिए और यदि आवश्यक हो तो उसे बिक्री द्वारा एक दूसरे सम्पन्न धारक को हस्तांतरित कर देना चाहिए, जो भुगतान कर सके। यह राजस्व भी 1793 से नकद वसूला जाने लगा था, जबकि पहली सरकारों द्वारा जिन्स के रूप में ही वसूल किया जाता था और यह बात अंग्रेज भलीभांति जानते थे। राजस्व की नकद वसूली के लिए भी बनिया व्यापारी और महाजन वर्ग ने अंग्रेजों को उकसाया क्योंकि किसान के पास नकद रुपया नहीं होता था और उत्तर भारत के ग्रामीण समाज में नकद का चलन था भी नहीं, वस्तु विनिमय ही होता था। इस सबका सीधा असर जाटों जैसे वास्तविक कृषक समुदायों पर पड़ा जो काश्तकार की भूमिका में प्रमुख थे। इस कठोर कर प्रणाली में फंस कर किसान को अपनी जोत के उत्पादन का एक बड़ा भाग नकद भुगतान के रूप में राज्य को देना पड़ता था, और नकद भुगतान के लिए उसे बनिये को कम दाम में फसल बेचनी पड़ती थी या महाजन से कर्ज लेना पड़ता था। कर्ज की जमानत के परिणामस्वरूप नीलामी फौजदारी और जबरन निजी बिक्री द्वारा उसकी भूमि

के स्वामित्व का हस्तांतरण हो जाता था। इस प्रकार उसकी भूमि का बड़ा हिस्सा साहूकार वर्ग के पास चला जाता था, जो प्रायः शहरी था। 1793 के अधिनियम द्वारा वैध पट्टे के बिना दी गयी लगान–मुक्त भूमि को मुकदमा दायर करके छीनने का अधिकार कलक्टरों को दे दिया गया। लोगों के पास पीढ़ियों से शासन से मिली ऐसी बहुत जमीनें थी, पर कागज नहीं थे, क्योंकि पहले जमाने में सरकारी अभिलेखों में नाम दर्ज कर लिए जाते थे और उनसे ही काम चलता रहता था। लोगों को अलग से कागज नहीं दिए जाते थे।

10 मई 1857 को मेरठ से जो चिनगारी छूटी, देखते–ही–देखते उसने सारे उत्तर भारत को अपनी जद में ले लिया। अंग्रेजों की बंगाल सेना में पूरबियों की संख्या अधिक थी परन्तु मेरठ की फौजों में सबसे अधिक उत्तर प्रदेश और हरियाणा के किसान–पुत्र थे, जिनमें जाटों की संख्या महत्वपूर्ण थी। खेती में आये दिन होने वाली परेशानियों और कठिनाइयों से तंग आकर और सम्मानपूर्वक रोटी कमाने के लालच में इन किसानों के बेटे ब्रिटिश सेना में भरती हो जाते थे और ईस्ट इंडिया कम्पनी का क्षेत्र बढ़ाने में उसकी मदद करते थे। लेकिन जब इन सिपाहियों को अपने लोगों, यानि किसानों पर हो रहे अत्याचारों के बारे में पता चला, तो वे चुप कैसे बैठ सकते थे? इसलिए विद्रोह अचानक मेरठ फौज में सबसे पहले जाटों की तर्ज पर फूट पड़ा और दोआब के हर गाँव में फैल गया।

यह किसान के भूमि अधिकारों की घोर हानि ही थी, जिसने उत्तर–पश्चिमी प्रान्त में 1857 के ग्रामीण विस्फोट के पीछे की ताकत प्रदान की, और विदेशी विरोध की एक शक्तिशाली भावना ने परिश्रमी किसान जातियों को विद्रोह के लिए खड़ा कर दिया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश सेनाओं पर हमला किया, बल्कि तहसील और कोषागार कार्यालयों को भी लूटा और जला दिया, जहाँ के लिए उनका मानना था कि भूमि के अभिलेख रखे गये थे। इसके अलावा उन्होंने साहूकारों और बैंकरों को लूटा और मार डाला, जिन्हें न केवल अंग्रेजी कानूनों द्वारा भोले–भाले और लापरवाह किसानों का खून चूसने का अवसर और अनुमति दी गयी थी, बल्कि अदालतों के माध्यम से उनकी जमीनें भी हड़पने का मौका दिया गया था।

आजादी के बाद 1957 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की शताब्दी और 2007 में डेढ़ सौवीं वार्षिकी सरकारी स्तर पर मनाई गयी जिनमें 1857 की घटनाओं और भाग लेने वाले वीरों पर पुस्तकें और पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित हुए। परन्तु भाग लेने वाले साधारण किसान वर्गों, जिन्होंने बड़ी शिद्दत के साथ औपनिवेशिक राज्य के विरुद्ध लड़ाई में भाग लिया था और अपना सब–कुछ कुरबान कर दिया था, के बारे में बहुत कम लिखा गया। कहा गया कि उनके बारे में रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं हैं। यह सत्य है कि किसान जातियों, जिनमें जाट प्रमुख स्थान रखते हैं, की सहभागिता के बारे में वृत्त या अभिलेख उपलब्ध नहीं हैं, क्योंकि आम लोग, जो अनपढ़ थे, अंग्रेज सरकार से भय के कारण कागज छिपा कर रखते थे और प्रायः नष्ट कर देते थे। सम्भवतः यह भय–मनोवि.ति का स्तर था कि लोग 1857 के बारे में खुलकर बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते थे। इसलिए ये बातें इतने लम्बे समय तक अज्ञात रहीं। यहाँ तक कि बाद में भी लोग विद्रोह में शामिल या उसमें भाग लेने वालों की सहायता करने वाले अपने परिजनों के बारे में बात करने या कोई जानकारी देने में भी हिचकिचाते थे, रिकॉर्ड रखना तो दूर की बात है। यह आम धारणा थी कि बगावत में शामिल गाँवों से जुड़े बच्चों को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। यह धारणा आजादी मिलने के बाद भी लम्बे समय तक जारी रही। इसलिए सभी जाट नायकों की पहचान करना सम्भव नहीं है। इस कारण हमें मुख्य रूप से ब्रिटिश अभिलेखों पर निर्भर रहना पड़ता है। उन को ही खंगालना पड़ता है, हालांकि घटनाओं के बारे में ब्रिटिश दृष्टिकोण से लिखा हुआ मिलता है पर विवरण तो मिलता है। रिपोर्टों में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले नेताओं के पत्रों के अनुवाद भी उपलब्ध है।

उनके बयान भी हैं। अंग्रेजी या अन्य भाषा में लिखे गये मूल अभिलेखों को देखने से पता चलता है कि अधिकांश हस्तलिखित दस्तावेज, चाहे वे मूल में हों या प्रतिलिपि के रूप में, अत्यन्त अस्पष्ट हस्तलेख में लिखे गये थे। यही दिक्कत दस्तावेजों के अनुवाद में देखने को मिलती है। सामान्य रूप से मूल पत्राचार में प्रायः इतनी विचित्र भाषा का प्रयोग किया जाता था कि उनमें अन्तर्निहित भावों को अंग्रेजी अनुवादों में पूरी तरह से व्यक्त नहीं किया जा सकता। कुछ अंश, जो प्राच्य स्रोतों से लिए गये हैं, और विभिन्न लोगों द्वारा लिखे गये हैं या असंगत रूप में हैं, उनके भावों के अनुवाद में गलती होना स्वाभाविक है, क्योंकि विद्रोह के नेताओं द्वारा लिखे फारसी, उर्दू या हिन्दी के पत्रों या उनके कथनों के अनुवाद प्रायः अदालतों के मुंशियों या अंग्रेजों द्वारा किये जाते थे, जो कम–से–कम भाषायी विद्वान नहीं होते थे और मूल अभिलेखों की सच्ची भावना की अभिव्यक्ति नहीं कर पाते थे। तत्कालीन सरकारी कार्यालयों के अनुवादकों के ज्ञान के बारे में तो कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं है। साफ है कि 1857 में जाट समुदाय के योगदान के बारे में जानने के लिए अभिलेखागारों में उपलब्ध सामग्री, ब्रिटिश लेखकों की रचनाओं, कुछ समकालीन तथा बाद के कार्यों, लोक स्मृति और परिवारों में उपलब्ध परिवार चिट्ठों तथा सर्वखाप अभिलेखों को आधार बनाया जा सकता है। इसके लिए समय और परिश्रम अपेक्षित है।

करतार सिंह सराभा

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए.इतिहास
एच.एफ.एस (सेवानिवृत)

करतार सिंह सराभा (जन्मः 24 मई 1896 – फांसीः 16 नवम्बर 1915) भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त करने के लिये अमेरिका में बनी गदर पार्टी के अध्यक्ष थे। भारत में एक बड़ी क्रान्ति की योजना के सिलसिले में उन्हें अंग्रेजी सरकार ने कई अन्य लोगों के साथ फांसी दे दी। 16 नवम्बर 1915 को करतार को जब फांसी पर चढ़ाया गया, तब वे मात्र साढ़े उन्नीस वर्ष के थे। प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगत सिंह उन्हें अपना आदर्श मानते थे।

पृष्ठभूमि व प्रारंभिक जीवन

सराभा, पंजाब के लुधियाना जिले का एक चर्चित गांव है। लुधियाना शहर से यह करीब पंद्रह मील की दूरी पर स्थित है। गांव बसाने वाले रामा व सद्दा दो भाई थे। गांव में तीन पत्तियां हैं–सद्दा पत्ती, रामा पत्ती व अराइयां पत्ती। सराभा गांव करीब तीन सौ वर्ष पुराना है और 1947 से पहले इसकी आबादी दो हजार के करीब थी, जिसमें सात–आठ सौ मुसलमान भी थे। इस समय गांव की आबादी चार हजार के करीब है।

करतार सिंह का जन्म 24 मई 1896 को माता साहिब कौर की कोख से हुआ। उनके पिता मंगल सिंह का करतार सिंह के बचपन में ही निधन हो गया था। करतार सिंह की एक छोटी बहन धन्न कौर भी थी। दोनों बहन–भाइयों का पालन–पोषण दादा बदन सिंह ने किया। करतार सिंह के तीन चाचा–बिशन सिंह, वीर सिंह व बख्शीश सिंह ऊंची सरकारी पदवियों पर काम कर रहे थे। करतार सिंह ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा लुधियाना के स्कूलों में हासिल की। बाद में उसे उड़ीसा में अपने चाचा के पास जाना पड़ा। उड़ीसा उन दिनों बंगाल प्रांत का हिस्सा था, जो राजनीतिक रूप से अधिक सचेत था। वहां के माहौल में सराभा ने स्कूली शिक्षा के साथ अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ना भी शुरू किया। दसवीं कक्षा पास करने के उपरांत उसके परिवार ने उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए उसे अमेरिका भेजने का निर्णय लिया और 1 जनवरी 1912 को सराभा ने अमेरिका की धरती पर पांव रखा। उस समय उसकी आयु पंद्रह वर्ष से कुछ महीने ही अधिक थी। इस उम्र में सराभा ने उड़ीसा के रेवनशा कॉलेज से ग्यारहवीं की परीक्षा पास कर ली थी। सराभा गांव का रुलिया सिंह 1908 में ही अमेरिका पहुंच गया था और अमेरिका–प्रवास के प्रारंभिक दिनों में सराभा अपने गांव के रुलिया सिंह के पास ही रहा। उनके बचपन की जीवन संबंधी क्षणों में ऐतिहासिकता के अंश उसके अमेरिका–प्रवास के दौरान ही शुरू होते हैं, जब उसके भीतर एक आजाद देश में रहते हुए अपनी राष्ट्रीय अस्मिता, आत्मसम्मान व आजाद की तरह जीने की इच्छा पैदा हुई। इस चेतना को प्राप्त करने की शुरूआत सानफ्रांसिस्को की बंदरगाह पर उतरते ही शुरू हो गई थी, जब आव्रजन अधिकारी ने उससे अमेरिका आने का कारण पूछा था और सराभा ने बर्कले विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करना अपना उद्देश्य बताया था। अधिकारी द्वारा उतरने की अनुमति न दिए जाने के प्रश्न के उत्तर में सराभा ने तर्कपूर्ण उत्तर देकर अधिकारी की संतुष्टि करवा दी थी। लेकिन अमेरिका के दो तीन महीने के प्रवास में ही जगह–जगह पर मिले अनादर ने सराभा के भीतर सुशुप्त चेतना जगानी शुरू कर दी। एक बुजुर्ग महिला के घर में किराएदार के रूप में रहते हुए, जब अमेरिका के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महिला द्वारा घर को फूलों व वीर नायकों के चित्रों से सजाया गया तो सराभा ने इसका कारण पूछा। महिला के यह बताने पर कि अमेरिका के स्वतंत्रता दिवस पर नागरिक ऐसे ही घर सजा कर खुशी का इजहार करते हैं तो सराभा के मन में भी यह भावना जागृत हुई कि हमारे देश की आजादी का दिन भी होना चाहिए।

भारत से अमेरिका गए भारतीय, जिनमें से ज्यादातर पंजाबी थे, प्रायः पश्चिमी तट के नगरों में रहते और काम की तलाश करते थे। इन शहरों में पोर्टलैंड, सेंट जॉन, एस्टोरिया, एवरेट आदि शामिल थे, जहां लकड़ी के कारखानों व रेलवे वर्कशॉपों में काम करने वाले भारतीय बीस–बीस, तीस–तीस की टोलियों में रहते थे। कनाडा व अमेरिका में गोरी नस्ल के लोगों के नस्लवादी रवैये से भारतीय मजदूर काफी दुखी थे। भारतीयों के साथ इस भेदभावपूर्ण व्यवहार के विरुद्ध कनाडा में संत तेजा सिंह संघर्ष कर रहे थे तो अमेरिका में ज्वाला सिंह ठट्ठीआं संघर्षरत थे। इन्होंने भारत से विद्यार्थियों को पढ़ाई करने के लिए अमेरिका बुलाने के लिए अपनी जेब से छात्रवृत्तियां भी दीं।

करतार सिंह सराभा अपने गांव के रुलिया सिंह के पास कुछ समय एस्टोरिया में रहा। 1912 के आरंभ में पोर्टलैंड में भारतीय मजदूरों का एक बड़ा सम्मेलन हुआ, जिसमें बाबा सोहन सिंह भकना, हरनाम सिंह टुंडीलाट, काशीराम आदि ने हिस्सा लिया। ये सभी बाद में गदर पार्टी के महत्त्वपूर्ण नेता बन कर उभरे। इस समय करतार सिंह की भेंट ज्वाला सिंह ठट्ठीआं से भी हुई, जिन्होंने उसे बर्कले विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के लिए प्रेरित किया, जहां सराभा रसायन शास्त्र का विद्यार्थी

माना दुनिया बुरी है, सब जगह धोखा है। किंतु हम तो अच्छे बने, हमें किसने रोका है।।

बना। बर्कले विश्वविद्यालय में करतार सिंह पंजाबी होस्टल में रहने लगा। बर्कले विश्वविद्यालय में उस समय करीब तीस विद्यार्थी पढ़ रहे थे, जिनमें ज्यादातर पंजाबी व बंगाली थे। ये विद्यार्थी दिसंबर, 1912 में लाला हरदयाल के संपर्क में आए, जो उन्हें भाषण देने गए थे। लाला हरदयाल ने विद्यार्थियों के सामने भारत की गुलामी के संबंध में काफी जोशीला भाषण दिया। भाषण के पश्चात् हरदयाल ने विद्यार्थियों से व्यक्तिगत रूप से भी बातचीत की। लाला हरदयाल और भाई परमानंद ने भारतीय विद्यार्थियों के दिलों में ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार के खिलाफ भावनाएं पैदा करने में बड़ी भूमिका निभाई। भाई परमानंद बाद में भी सराभा के संपर्क में रहे। इससे धीरे–धीरे सराभा के मन में देशभक्ति की तीव्र भावनाएं जागृत हुईं और वह देश के लिए मर–मिटने का संकल्प लेने की ओर अग्रसर होने लगा।

अमेरिका में गदर पार्टी की स्थापना

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की विफलता के बाद में ब्रिटिश सरकार ने सत्ता पर सीधा नियंत्रण कर एक ओर उत्पीड़न तो दूसरी ओर भारत में औपनिवेशिक व्यवस्था का निर्माण शुरू किया। क्योंकि खुद ब्रिटेन में लोकतांत्रिक व्यवस्था थी, इसलिए म्युनिसपैलिटी आदि संस्थाओं का निर्माण भी किया गया, लेकिन भारत का आर्थिक दोहन अधिक से अधिक हो, इसलिए यहां के देशी उद्योगों को नष्ट करके यहां से कच्चा माल इंग्लैंड भेजा जाना शुरू किया गया। साथ ही पूरे देश में रेलवे का जाल बिछाया जाना शुरू हुआ। ब्रिटिश सरकार ने भारत के सामंतों को अपना सहयोगी बना कर किसानों का भयानक उत्पीड़न शुरू किया। नतीजतन उन्नीसवीं सदी के अंत तक आते–आते देश के अनेक भागों में छिटपुट विद्रोह होने लगे। महाराष्ट्र और बंगाल तो इसके केंद्र बने ही, पंजाब में भी किसानों की दशा पूरी तरह खराब होने लगी। परिणामतः बीसवीं सदी के आरंभ में ही पंजाब के किसान कनाडा, अमेरिका की ओर मजदूरी की तलाश में देश से बाहर जाने लगे। मध्यवर्गीय छात्र भी शिक्षा–प्राप्ति हेतु इंग्लैंड, अमेरिका वे यूरोप के देशों में जाने लगे थे।

अमेरिका और कनाडा में भारत से काम की तलाश में सबसे पहले 1895 और 1900 के बीच कुछ लोग पहुंचे। 1897 में कुछ सिख सैनिक इंग्लैंड में डायमंड जुबली में हिस्सा लेने आए और लौटते हुए कनाडा से गुजरे। उनमें से कुछ वहीं रुक गए, लेकिन ज्यादातर पंजाबी मलाया, फिलीपींस, हांगकांग, शंघाई, फिजी, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड आदि देशों से सबसे पहले कनाडा और अमेरिका पहुंचे। 1905 में कनाडा पहुंचने वाले भारतीयों की संख्या सिर्फ 45 थी, जो 1908 में बढ़ कर 2023 तक पहुंच गई। एक विद्वान् के अनुसार 1907 में वहाँ 6000 तक भारतीय पहुंच चुके थे। इनमें से 80 प्रतिशत पंजाबी–सिख किसान थे। 1909 में कनाडा में प्रवेश के कानून कड़े कर दिए जाने पर भारतीयों का रुख अमेरिका की ओर हुआ, जहां पर 1913 में भारतीयों की संख्या एक अनुमान के अनुसार पांच हजार थी, हालांकि डॉ० राम मनोहर लोहिया अपनी पुस्तक 'Indian in Foreign Lands' में इनकी संख्या 15000 बताते हैं। इन भारतीयों में 90 प्रतिशत पंजाबी–सिख किसान थे, कुछ मध्यवर्गीय विद्यार्थी थे।

कनाडा और अमेरिका पहुंचे पढ़े–लिखे भारतीयों ने शीघ्र ही वहां से भारतीय स्वतंत्रता की मांग उठाने वाली पत्र–पत्रिकाएं निकालनी शुरू कीं। तारकनाथ दास ने Free Hindustan पहले कनाडा से पत्र निकाला तो बाद में अमेरिका से। गुरुदत्त कुमार ने कनाडा में 'यूनाइटेड इंडिया लीग' बनाई और 'स्वदेश सेवक' पत्रिका भी निकाली।

कनाडा और अमेरिका के अतिरिक्त इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, जापान व अन्य अनेक देशों में पहुंचे भारतीयों ने स्वतंत्रता की अलख जगाई। भारत से बाहर जाकर भारतीय स्वतंत्रता के लिए आंदोलन करने वाले भारतीयों में सबसे पहला चर्चित नाम श्यामजी कृष्ण वर्मा का है, जिन्होंने पहले इंग्लैंड और उसके बाद पेरिस से स्वतंत्रता का बिगुल बजाया। इंग्लैंड से शुरू हुआ 'इंडियन सोश्योलोजिस्ट' अंग्रेजों की कोपदृष्टि का शिकार होकर पेरिस पहुंचा और वहां से भारत और दूसरी जगहों पर पहुंचता रहा। पेरिस में श्यामजी कृष्ण वर्मा के साथ–साथ सरदार सिंह राणा और मदाम भीकाजी कामा बहुत सक्रिय रहीं। 1907 के स्टुगार्ड में हुए समाजवादी सम्मेलन में भीकाजी कामा ने ही पहली बार भारत का झंडा फहराया। जर्मनी में वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, जो 'चट्टो' के नाम से चर्चित थे और चंपक रमण पिल्लै सक्रिय थे। इन्हीं के साथ स्वामी विवेकानंद के छोटे भाई डॉ० भूपेन्द्रनाथ दत्त भी सक्रिय रहे। 1906 में इंग्लैंड पहुंचे विनायक दामोदर सावरकर ने 'अभिनव भारत' व 'फ्री इंडिया सोसायटी' बनाई। उन्हीं से प्रेरित होकर पंजाब से पहुंचे मदनलाल ढींगरा ने 1909 में कर्जन वायली की हत्या कर दी, जिसके कारण उन्हें डेढ़ महीने के भीतर ही लंदन में फांसी दे दी गई। भारत से बाहर भारत की आजादी के लिए फांसी पर चढ़ कर शहीद होने वाले वे शायद पहले भारतीय थे। इसके 31 साल बाद एक और पंजाबी देशभक्त उधम सिंह ने जलियांवाला बाग के कुख्यात खलनायक ओडवायर की हत्या कर 1940 में लंदन में ही फिर शहादत हासिल की थी। इस बीच ईरान में सूफी अंबा प्रसाद और कनाडा में भाई मेवा सिंह शहीद हुए।

भूमिका

16 नवम्बर 1915 को साढेध उन्नीस साल के युवक करतार सिंह सराभा को उनके छह अन्य साथियों – बख्शीश सिंह, (जिला अमृतसर) हरनाम सिंह, (जिला स्यालकोट)य जगत सिंह, (जिला लाहौर) सुरैण सिंह व सुरैण, दोनों (जिला अमृतसर) व विष्णु गणेश पिंगले, (जिला पूना महाराष्ट्र)– के साथ लाहौर जेल में फांसी पर चढ़ा कर शहीद कर दिया गया। इनमें से जिला अमृतसर के तीनों शहीद एक ही गांव गिलवाली से संबंधित थे। इन शहीदों व इनके अन्य साथियों ने भारत पर काबिज ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ 19 फरवरी 1915 को 'गदर' की शुरुआत की थी। इस 'गदर' यानी स्वतंत्रता संग्राम की योजना अमेरिका में 1913 में अस्तित्व में आई 'गदर पार्टी' ने बनाई थी और इसके लिए लगभग आठ हजार भारतीय अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में सुख–सुविधाओं भरी जिंदगी छोड़ कर भारत को अंग्रेजों से आजाद करवाने के लिए समुद्री जहाजों पर भारत पहुंचे थे। 'गदर' आंदोलन शांतिपूर्ण आंदोलन नहीं था, यह सशस्त्र विद्रोह था, लेकिन 'गदर पार्टी' ने इसे गुप्त रूप न देकर खुलेआम इसकी घोषणा की थी और गदर पार्टी के पत्र 'गदर', जो पंजाबी, हिंदी, उर्दू व गुजराती चार भाषाओं में निकलता था–के माध्यम से इसका समूची भरतीय जनता से आह्वान किया था। अमेरिका की स्वतंत्र धरती से प्रेरित हो अपनी धरती को स्वतंत्र करवाने का यह शानदार आह्वान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित था और ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने जिसे अवमानना से 'गदर' नाम दिया, उसी 'गदर' शब्द को सम्मानजनक रूप देने के लिए अमेरिका में बसे भारतीय देशभक्तों ने अपनी पार्टी और उसके मुखपत्र को ही 'गदर' नाम से विभूषित किया। जैसे 1857 के 'गदर' यानी प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कहानी बड़ी रोमांचक है, वैसे ही स्वतंत्रता के लिए दूसरा सशस्त्र संग्राम यानी 'गदर' भी चाहे असफल रहा लेकिन इसकी कहानी भी कम रोचक नहीं है।

विश्व स्तर पर चले इस आंदोलन में दो सौ से ज्यादा लोग शहीद हुए, 'गदर' व अन्य घटनाओं में 395 से ज्यादा ने अंडमान जैसी जगहों पर काले पानी की उम्रकैद भुगती और 122 ने कुछ कम लंबी कैद भुगती। सैकड़ों पंजाबियों को गांवों में वर्षों तक नजरबंदी झेलनी पड़ी। उस आंदोलन में बंगाल से रास बिहारी बोस वे शचीन्द्रनाथ सान्याल, महाराष्ट्र से विष्णु गणेश पिंगले व डॉ० खानखोजे, दक्षिण भारत से डॉ० चेन्चय्या व चंपक रमण पिल्लै तथा भोपाल से बरकतुल्ला आदि ने हिस्सा लेकर उसे एक ओर राष्ट्रीय रूप दिया तो शंघाई, मनीला, सिंगापुर आदि अनेक विदेशी नगरों में हुए विद्रोह ने इसे अंतर्राष्ट्रीय रूप भी दिया। 1857 की भांति ही 'गदर' आंदोलन भी सही मायनों में धर्म निरपेक्ष संग्राम था जिसमें सभी धर्मों व समुदायों के लोग शामिल थे।

गदर पार्टी आंदोलन की यह विशेषता भी रेखांकित करने लायक है कि विद्रोह की असफलता से गदर पार्टी समाप्त नहीं हुई, बल्कि इसने अपना अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व बचाए रखा व भारत में कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल होकर व विदेशों में अलग अस्तित्व बनाए रखकर गदर पार्टी ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आगे चल कर 1925–26 से पंजाब का युवक विद्रोह, जिसके लोकप्रिय नायक भगत सिंह बने, भी गदर पार्टी व करतार सिंह सराभा से अत्यंत रूप में प्रभावित रहा। एक तरह से भगत सिंह का व्यक्तित्व व चिंतन गदर पार्टी की परंपरा को अपनाते हुए उसके अग्रगामी विकास के रूप में निखरा।

करतार सिंह सराभा गदर पार्टी के उसी तरह नायक बने, जैसे बाद में 1925–31 के दौरान भगत सिंह क्रांतिकारी आंदोलन के महानायक बने। यह अस्वाभाविक नहीं है कि करतार सिंह सराभा ही भगत सिंह के सबसे लोकप्रिय नायक थे, जिनका चित्र वे हमेशा अपनी जेब में रखते थे और 'नौजवान भारत सभा' नामक युवा संगठन के माध्यम से वे करतार सिंह सराभा के जीवन को स्लाइड शो द्वारा पंजाब के नवयुवकों में आजादी की प्रेरणा जगाने के लिए दिखाते थे। 'नौजवान भारत सभा' की हर जनसभा में करतार सिंह सराभा के चित्र को मंच पर रख कर उसे पुष्पांजलि दी जाती थी। करतार सिंह सराभा, गदर पार्टी आंदोलन के लोक नायक के रूप में अपने बहुत छोटे–से राजनीतिक जीवन के कार्यकलापों के कारण उभरे। कुल दो–तीन साल में ही सराभा ने अपने प्रखर व्यक्तित्व की ऐसी प्रकाशमान किरणें छोड़ीं कि देश के युवकों की आत्मा को उसने देशभक्ति के रंग में रंग कर जगमग कर दिया। ऐसे वीर नायक को फांसी देने से न्यायाधीश भी बचना चाहते थे और सराभा को उन्होंने अदालत में दिया बयान हल्का करने का मशविरा और वक्त भी दिया, लेकिन देश के नवयुवकों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनने वाले इस वीर नायक ने बयान हल्का करने की बजाय और सख्त किया और फांसी की सजा पाकर खुशी में अपना वजन बढ़ाते हुए हंसते–हंसते फांसी पर झूल गया।

सरदार करतार सिंह सराभा को आज लगभग भूला दिया गया लेकिन वे क्रान्तिकारीयों के सबसे बड़े प्रेरकादायक थे। शहिद भगत सिंह के वे सबसे बड़े प्रेरणादायक थे क्योकि 19 वर्ष को अल्पायु में देश के लिए फांसी पर चढ़्ना ही देश के लिए सबसे बड़ा बलिदान था।

माना दुनिया बुरी है, सब जगह धोखा है। किंतु हम तो अच्छे बने, हमें किसने रोका है।।

करतार सिंह सराभा की यह गजल भगत सिंह को बेहद प्रिय थी वे इसे अपने पास हमेशा रखते थे और अकेले में अक्सर गुनगुनाया करते थे:

"यहीं पाओगे महशर में जबां मेरी बयाँ मेरा,
मैं बन्दा हिन्द वालों का हूँ है हिन्दोस्तां मेरा,
मैं हिन्दी ठेठ हिन्दी जात हिन्दी नाम हिन्दी है,
यही मजहब यही फिरका यही है खानदां मेरा,
मैं इस उजड़े हुए भारत का यक मामूली जर्रा हूँ
यही बस इक पता मेरा यही नामो–निशाँ मेरा,
मैं उठते–बैठते तेरे कदम लूँ चूम ऐ भारत!
कहाँ किस्मत मेरी ऐसी नसीबा ये कहाँ मेरा,
तेरी खिदमत में अय भारत! ये सर जाये ये जाँ जाये,
तो समझूँगा कि मरना है हयाते–जादवां मेरा।"

शहिद करतार सिंह सराभा का स्टैच्यू पटियाला के भटिन्ड़ा चौक पर लगा हुआ है। स्टेच्यू से ही पता लगता है कि वे कितने बड़े क्रान्तिकारी थे और उन्होन देश के लिए इतनी अल्पायू में सर्वोच्च बलिदान दिया। मैं सरदार करतार सिंह सराभा जी को हमेशा हमेशा नमन करता है।

चौधरी चरण सिंह : नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा (मो० 9888004417)

चौ चरण सिंह के पिताजी छोटे से किसान परिवार से थे और तीन गाँव में इनके पिताजी का जीवन यापन चला। आखिरी गाँव भदोला थाना व ब्लाक भौजपुर मोदीनगर के पास है। यही इनकी थोड़ी बहुत ज़मीन थी। जो चौ चरण सिंह जी के समय ही नहीं रही थी।

इसका हवाला ये है जब चौ चरण सिंह अंतिम समय में बीमार हुवे और इस दुनिया से विदा हुवे तब उनके पास केवल बैंक में 24 हज़ार रुपए थे, जिनमें से 20 हज़ार बीमारी में खर्च हो गए थे, चार हज़ार बैंक में थे। और कोई मकान या प्लाट और खेती की भूमि उनके नाम नहीं थी।

इसलिए ही मै धन, पद, यश की भूख में पगलाय लोगों से ख़ुशवंत जी के शब्द अकसर लिखता और कहता हूँ कि...

करो ऐसा कि लिखें लोग,
लिखों ऐसा कि पढ़ें लोग।

आम मनुष्य/परिवार/समाज अपने को आम से ख़ास (धन, पद, यश) की श्रेणी में जाने की लालसा में नैतिक पतन के रास्ते को या अपनी लगन, मेहनत से उस विषय/कार्य का विशेषज्ञ बन पहले से बेहतर या उच्च श्रेणी कर प्राप्त तो कर लेता है।

लेकिन उस सफलता में अहंकार, निष्ठुरता का आचरण अपना कर दूसरों को तुच्छ समझ उपेक्षा, उपहास करने से पाई बेहतरी को मोहर लगाने को गर्व समझता है।

जबकि सच्चाई ये है कि उसकी सफलता की जो प्रशंसा उसे व्यक्ति/परिवार/समाज देता है। धीरे धीरे वह अशोभनीय आचरण से खोने लगता है।

उसे मालूम ही नहीं होता कि जिस रुतबे के प्रभाव में लोग आपके आचरण को बरदास्त करतें हैं।

उन्हें अपना समय व्यतीत करना या उल्लू सीधा करना है। तभी वे चाकरी भी करतें है और अपमान भी सहन करते है।

इस मानसिकता से प्राप्त सफलताओं को मालूम ही नहीं होता कि आपको मिली उपलब्धियों को दरबारी चाटुकारों के घेरे ने गौण कर रखा है।

इस घेरे के कारण जो अशोभनीयता पर नाराज़गी करते है। वे दुश्मन से लगते है।

इसलिए हम सबको चौ चरण सिंह, चौ छोटू राम जी, डॉ० अम्बेडकर आदि जैसे अनेकों को पढ़ना नहीं समझना भी चाहिए कि उनके जाने के बाद भी विरोधी और समर्थक उनके व्यक्तित्व को अपने लाभ में इस्तेमाल क्यों कर रहें है।

इसके उलट धन, पद और यश की लालसा वाले गुम नाम क्यों है या उनको जाति, धर्म के नाम पर जब सार्वजनिक रूप से याद और सम्मान देने का प्रयास करतें है, तो जनता क्यों आक्रोशित हो उठती है?

चौधरी चरण सिंह देश के किसान कामगारों के मसीहा थे। वे पिछड़े दलित शोषित अल्पसंख्यक तथा सर्वहारा के रहनुमा थे। उनमें देशभक्ति एवं लोक कल्याण की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। वे भारत माता के ऐसे महान सपूत थे जिन्होंने राष्ट्र हित में बड़े से बड़ा त्याग करने में जरा भी विलम्ब नहीं किया। इस्तीफा तो हर समय उनकी जेब में रखा रहता था। विशुद्ध, गांधीवादी, आदर्श प्रिय, यथार्थवादी तथा प्रखर व्यक्तित्व के धनी चौधरी चरण सिंह ने महात्मा गान्धी की नीतियों एवं कई कार्यक्रमों को मूर्तरूप

देने का प्रयास किया। वे प्रतिभा सम्पन्न ऐसे जीवन्त क्रान्तिदर्शी राजनीतिज्ञ थे जो अपनी दूरदर्शिता, दृढ़निश्चयता और ईमानदारी के लिए देश के इतिहास में सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। सत्य भाषण और स्पष्टवादिता उनके चरित्र का बल था जिसके कारण उन्हें लौह पुरूष कहना सर्वथा उचित है। उनसे मतभेद रखने वाला व्यक्ति भी यह स्वीकार करता है कि वह एक निडर और ईमानदार लोक नेता थे। भ्रष्टाचार को प्रशासन और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में खत्म करना उनके जीवन का लक्ष्य था। सादा जीवन, उच्च विचार, उज्ज्वल चरित्र उनकी विशेषतायें थी। सामाजिक शोषण और उत्पीड़न के वे कट्टर विरोधी थे। उनकी आर्थिक नीतियों और मान्यताओं का मूल किसानों, कमजोर वर्गों, पिछड़े और अनुसूचित जातियों का कल्याण व उनकी आर्थिक दशा को ऊंचा उठाना था जिससे भारत प्रगति कर सके। अतः वह कृषि मूलक आर्थिक नीतियों के समर्थक थे किन्तु औद्योगिक एवं सर्वतोमुखी विकास में भी उनका उतना ही विश्वास था।

हिन्दुस्तान की राजनीति में जो लोग नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहे उनमें चौधरी चरण सिंह का नाम पहली पंक्ति में आता है। जहां मूल्यों और अनुशासन की बात आती थी वे वज्र से कठोर थे वहीं मानवीय दर्द के प्रति वह कुसम से कोमल थे। गौतम बुद्ध और महात्मा गांधी रामकृष्ण परमहंस और महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा रहबरे आजम दीनबंधु सर चौधरी छोटूराम और महान क्रान्तिकारी एवं भारत की प्रथम अस्थायी स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार के राष्ट्रपति राजा महेन्द्र प्रताप के नैतिक मूल्यों की छाया में उनके असाधारण व्यक्तित्व का विकास हुआ था।

चौधरी चरण सिंह के विचारानुसार भारत की गरीबी का कारण गांव और खेती की निरन्तर उपेक्षा है उनके मत में देश की तरक्की का रास्ता खेतों की पगडंडी, बागों और खलिहानों तथा गांवों की गलियों से निकलता है शहर के महलों से नहीं। जब तक गांवों का विकास नहीं होगा हिन्दुस्तान उन्नति के पथ पर नहीं बढ़ सकेगा। चौधरी साहब ने कुटीर और ग्रामीण लघु उद्योगों के विस्तार पर जोर देते हुए प्राकृतिक संसाधनों को स्वदेशी तकनीक से उपयोग के लिए आहवान किया। वे मशीनीकरण के विरोधी नहीं थे लेकिन उनकी मान्यता थी कि जो कार्य हाथों से हो उसके लिए मशीनों का प्रयोग नहीं किया जायें। इससे बेरोजगारों को काम मिलेगा।

चौधरी चरण सिंह के शब्दों में, 'भ्रष्टाचार आज अपनी चरम सीमा पर भयानक रूप धारण कर चुका है। कोई ही जन नेता होगा जो ईमानदारी से काम कर रहा होगा। सर्वत्र उपर से नीचे भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हमारी राजनीतिक व्यवस्था में 25 ईमानदार लोग तैनात कर दिए जाये तो पांच वर्ष में भ्रष्टाचार को दूर किया जा सकता है।' इन पंक्तियों के लेखक का चौधरी साहब से भारतीय क्रान्ति दल की स्थापना इन्दौर मध्य प्रदेश के राष्ट्रीय अधिवेशन नवम्बर 1967 के समय से घनिष्ठ रूप से राजनीतिक एवं कार्यक्रमों में सक्रियता से रहा हैं। अपने एक पत्र में उन्होंने लेखक को लिखा था। आज जो भी लोग राजनीति के क्षेत्र में आते है वे विधायक बनना चाहते है और विधायक बनते ही उनके मन के अन्दर मंत्री पद की लालसा पैदा हो जाती है। किसी के सामने कोई आदर्श नहीं है। सभी राजनीतिक पार्टियों का यही हाल है। कितना सटीक कथन है। चौधरी चरण सिंह ने राजनीति और प्रशासन में पनपे जातिवाद के विरोध में एक पत्र लिखकर तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू को सुझाव दिया था कि अन्तर्जातीय विवाह करने वाले युवकों को राजपत्रित पदों पर नियुक्त किया जाये लेकिन उनके विचारों को सही रूप में नहीं लिया गया। नेहरू जी चुप्पी साध गये।

चौधरी चरण सिंह आधुनिक भारत के निर्माता व जननायक थे। वर्तमान सरकारें यदि उनकी नीतियों का अनुसरण करें तो देश की तस्वीर बदल जायेगी। आज गरीबी की आवाज उठाने वाले अनेक नेता हैं जो उनके नाम पर राजनीति कर रहे हैं लेकिन वे केवल भाषणों द्वारा ही जनता के प्रति कोरी हमदर्दी का प्रदर्शन करने के सिवाय व्यवहारिक रूप में शून्य हैं। चौधरी चरण सिंह के प्रति सरकार, राजनीतिक विचारकों व समाज सेवी संस्थाओं का उपेक्षापूर्ण रवैया और उदासीनता के कारण उनके जीवन चरित्र एवं दर्शन का पूर्ण रूप से मूल्यांकन अभी तक सम्भव नहीं हुआ है। इस महान विभूति का चरित्र बहुत उच्च स्तर का था। महान व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना असम्भव है। उसका तो केवल एहसास ही किया जा सकता है।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा कहते है कि चौधरी चरण सिंह जी की जो बात मुझे सबसे अधिक प्रभावित करती थी वह यह कि वे हमारे देश की जमीन से जुडे हुए थे। उन्हें इस देश की अस्मिता की गहरी पहचान थी। भारतीय किसानों के लिए चौधरी साहब ने जो कुछ भी किया वह ऐतिहासिक महत्व का है। मैं उन्हें देश से जुड़ा नेता मानता हूँ। पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का कहना है कि चौधरी चरण सिंह का जीवन उनका देशभक्ति का जज्बा उनकी ईमानदारी एक मिसाल है। हमें उनकी

खूबियों से प्रेरणा लेनी है। वह बहुत साफ दिल इन्सान थे। उनकी जिन्दगी हमारे लिए उदाहरण है। हमें गर्व है कि ऐसे महापुरूष ने इस जमीन पर जन्म लिया। ऐसे महापुरूष के बताए रास्ते पर चलने का हम संकल्प लें। माकर्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव कामरेड श्री हरिकिशन सिंह सुरजीत के शब्दों में चौधरी चरण सिंह ने कौमी मुक्ति संघर्ष और किसानों को जागरूक करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चौधरी चरण सिंह का नाम उनके कार्यों के कारण अमर रहेगा और उनके विचार किसानों की हमेशा रहनुमाई करते रहेंगे। पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने लिखा है कि चौधरी चरण सिंह से सम्पर्क का मौका एक बार अमेरिका में उनकी बिमारी के दौरान मिला था जिसमें उन्होंने कहा था कि इस देश का क्या होगा। इसके बाद उनकी आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। उनके इस एक ही वाक्य में पीढ़ी की पूरी वेदना पूरा दर्द छिपा था। इसलिए मेरा कहना है कि देश के गरीब मेहनतकश किसान मजदूर के लिए जो टीस चौधरी साहब के मन में थी यदि उसे हमने सही मायनों में नहीं पहचाना तो उनकी आशाएं पूरी नहीं होगी। मुझे आशा और विश्वास है कि उन्होंने जो रास्ता हमें दिखाया है उस पर चलकर हम उनके सपनों का एक नया भारत बनायेंगे।

युवा तुर्क रहे एवं हिन्दुस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर का मानना है कि चौधरी चरण सिंह की जब हम बात करते है तो हम उस मंत्र को याद करते है जो गाँधी जी ने दिया था और जिसे चौधरी साहब ने अपने में उतारा था। भारत के विकास का पथ भारत के गांवों खेत और खलियानों से होकर गुजरता है। जब चौधरी साहब किसान की बात करते थे तो किसान एक प्रतीक था। वह प्रतीक था बेबसी का शोषण का वह प्रतीक था उस दमन का जिस दमन के सहारे आज का समाज चल रहा है। एक नया समाज बनाने का सवाल नहीं है एक नया जीवन दर्शन है। एक नई जिन्दगी जीने का तरीका है जिस जिन्दगी में मेहनत करने वाला अपनी मेहनत का प्रतिफल पायेगा।

जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई लड़ी समाज को बदलने के लिये संघर्ष किया उन लोगों में अगली कतार में चौधरी चरण सिंह थे। आशा है कि न केवल हम उनकी जिन्दगी के सुनहरे हिस्सों को देखेंगे न केवल याद करेंगे कि वह प्रधानमंत्री थे वह कभी मुख्यमंत्री और भारत सरकार के गृह और वित्त मंत्री भी बने थे बल्कि यह याद करेंगे कि यह वह व्यक्ति था जो एक गरीब गांव की गलियों में किसान की झोंपड़ी से निकल कर आजादी की लड़ाई के दौर से निरन्तर संघर्ष करता रहा। दुख है कि चौधरी चरण सिंह अपनी जिन्दगी में अपने सपनों का भारत नहीं देख सकें। हमें इस दिशा में दो कदम आगे बढ़ाने के लिए सक्रिय होना है तभी नया हिन्दुस्तान बन सकेगा। भारत के उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी के शब्दों में चौधरी चरण सिंह की स्पष्टवादिता, ईमानदारी, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की जो छाप है वह राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले हर कार्यकर्ता के लिए दीपस्तम्भ है। देश की राजनीति में खास कर अर्थनीति को दिशा देने में चौधरी साहब का बड़ा योगदान है।

चौधरी चरण सिंह की धर्मपत्नी पूर्व विधायक व सांसद माता श्रीमती गायत्री देवी अपने पति के महान व्यक्तित्व को बहुत पसंद करती थी। उन्हीं के शब्दों में चौधरी साहब की एक बात मुझे बहुत अच्छी लगती है जो एक बार सही समझकर मन में ठान लेते हैं, उस पर अड़ जाते है उससे हटते नहीं चाहें लाख कोई कहे। यद्यपि लोग इसी कारण इन्हें जिद्दी भी कहते है लेकिन मैं समझती हूँ जो सख्त नहीं होगा वह अच्छा शासक नहीं हो सकता।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार कहा था कि चौधरी चरण सिंह को हम ग्रामीण भारत का प्रतिनिधि प्रवक्ता जीती जागती तस्वीर कह सकते हैं। भाव में भाषा में वेशभूषा में भोजन में चौधरी साहब वास्तविक भारत की तस्वीर पेश करते है। प्रख्यात इतिहासविद एवं अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रोफेसर बलराज मधोक की चौधरी चरण सिंह के साथ मिलकर सन् 1974 में भारतीय लोक दल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वे भारतीय लोक दल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी थे। प्रोफेसर मधोक के विचार में चौधरी चरण सिंह हिन्दुस्तान के बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी राजनेता थे। उनका महान व्यक्तित्व था। वे किसान कामगारों के हित चिन्तक थे।

वास्तव में चौधरी चरण सिंह एक व्यक्ति नहीं विचार थे एक आन्दोलन थे एक ऐसा समर्पित जीवन थे जिसके अन्दर गांव और हिन्दुस्तान का दर्द छिपा हुआ था। वे आम आदमी की खुशहाली के समर्थक थे। वे प्रत्येक भारतीय के लिए भोजन, वस्त्र, मकान के साथ–साथ स्वास्थ्य और शिक्षा की उचित व्यवस्था चाहते थे। चौधरी चरण सिंह आज हमारे बीच नहीं है लेकिन हमारे पास उनके विचार हैं। हमें उनके बताए रास्ते पर चलना होगा तभी उनके सपनों का नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब हो सकेगे।

दानवीर राजा महेंद्र प्रताप सिंह

(1 दिसम्बर 1886-29 अप्रैल 1979)

– लक्ष्मण सिंह फौगाट,
(मो० 6280830760)

भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, क्रातिंकारी, पत्रकार, शिक्षाविद्ध, लेखक, समाज सुधारक और महान दानवीर थे। उन्हें "आर्यन पेशवा" के नाम से भी जाना जाता था। भारत वर्ष के प्रथम राष्ट्राध्यक्ष एवं आजादहिन्द फौज के संस्थापक भी थे। यह सरकार प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान बनी थी और भारत के बाहर से संचालित हुई थी। उन्होने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान 1940 में जापान में "भारतीय कार्यकारी बोर्ड" (Executive Board of India) की स्थापना की थी। अपने कॉलेज के साथियों के साथ मिलकर उन्होने सन 1911 में बाल्कन युद्ध में भी भाग लिया। उनकी सेवाओं को याद करते हुए भारत सरकार ने उनकी स्मृति में एक डाक टिकट जारी किया है।

महेन्द्र प्रताप का जन्म 1 दिसम्बर 1886 को एक जाट परिवार में हुआ था जो मुरसान रियासत के शासक थे। यह रियासत वर्तमान उत्तर प्रदेश के हाथरस जिले में थी। वे राजा घनश्याम सिंह के तृतीय पुत्र थे। जब वे 3 वर्ष के थे तब हाथरस के राजा हरनारायण सिंह ने उन्हें पुत्र के रूप में गोद ले लिया।

हाथरस के कायस्थ राजा दयाराम ने 1817 में अंग्रेजों से भीषण युद्ध किया। मुरसान के जाट राजा ने भी युद्ध में जमकर साथ दिया। अंग्रेजों ने दयाराम को बंदी बना लिया। 1841 में दयाराम का देहान्त हो गया। उनके पुत्र गोविन्दसिंह गद्दी पर बैठे। 1857 में गोविन्दसिंह ने अंग्रेजों का साथ दिया फिर भी अंग्रेजों ने गोविन्दसिंह का राज्य लौटाया नहीं – कुछ गाँव, 50 हजार रुपये नकद और राजा की पदवी देकर हाथरस राज्य पर पूरा अधिकार छीन लिया। राजा गोविन्दसिंह की 1861 में मृत्यु हुई। संतान न होने पर अपनी पत्नी को पुत्र गोद लेने का अधिकार दे गये। अतः रानी साहबकुँवरि ने जटोई के ठाकुर रूपसिंह के पुत्र हरनारायण सिंह को गोद ले लिया। अपने दत्तक पुत्र के साथ रानी अपने महल वृन्दावन में रहने लगी। राजा हरनारायन को कोई पुत्र नहीं था। अतः उन्होंने मुरसान के राजा घनश्यामसिंह के तीसरे पुत्र महेन्द्र प्रताप को गोद ले लिया। इस प्रकार महेन्द्र प्रताप मुरसान राज्य को छोड़कर हाथरस राज्य के राजा बने। हाथरस राज्य का वृन्दावन में विशाल महल है उसमें ही महेन्द्र प्रताप का शैशव काल बीता। बड़ी सुख सुविधाएँ मिली। महेन्द्र प्रताप का जन्म 1 दिसम्बर 1886 को हुआ। अलीगढ़ में सैयद खाँ द्वारा स्थापित स्कूल में बी.ए. तक शिक्षा ली लेकिन बी.ए. की परीक्षा में पारिवारिक संकटों के कारण बैठ न सके।

जींद रियासत के राजा की राजकुमारी से संगरूर में बड़ी धूमधाम से विवाह हुआ। राजा महेन्द्र प्रताप जी का विवाह जींद में बड़ी शान से हुआ। दो स्पेशल रेल गाड़ियों में बारात मथुरा स्टेशन से जींद गई। इस विवाह पर जींद नरेश ने तीन लाख पिचहत्तर हजार (3,75,000) रुपये व्यय किए थे। यह उस सस्ते युग का व्यय है, जब 1 रुपये का 1 मन गेहूँ आता था। विवाह में इतना अधिक दहेज आया था कि वृन्दावन के महल का विशाल आँगन उससे खचाखच भर गया। इस दहेज का बहुत सा सामान महाराज ने इष्ट मित्रों और जनता को बांट दिया। विवाह के समय राजा साहब की आयु केवल 14 वर्ष की थी और उनकी महारानी उनसे तीन वर्ष बड़ी थीं। इस छोटी अवस्था में भी महाराज में दानवृत्ति और त्यागवृत्ति विद्यमान थी। वह राज्याधिकार प्राप्त होने पर भी यथावत बनी रही, वरन् कहना चाहिए कि उनमें परोपकार की भावना निरंतर विकसित होती रही।

विवाह के बाद जब कभी महेन्द्र प्रताप ससुराल जाते तो उन्हें 11 तोपों की सलामी दी जाती। स्टेशन पर सभी अफसर स्वागत करते। रात को दरबार लगता और नृत्य–गान चलता जिसमें कभी–कभी रानी भी भाग लेती। उनके 1909 में पुत्री हुई–भक्ति, 1913 में पुत्र हुआ–प्रेम। देश–विदेश की खूब यात्राएँ कीं। 1906 में जिंद के महाराजा की इच्छा के विरुद्ध राजा महेन्द्र प्रताप ने कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लिया और वहाँ से स्वदेशी के रंग में रंगकर लौटे। महेंद्र प्रताप शुरू से ही आम शाही नवयुवकों की तरह नहीं थे। उनके पास मौका था कि वो भी राजाओं के बने संघ में शामिल होकर अंग्रेजों से अपने लिए बेहतर सुविधाओं की मांग करते और खुश रहते। लेकिन वो उनमें से नहीं थे, उनकी पढ़ाई मोहम्मडन एंग्लो ओरियंटल कॉलेज, अलीगढ़ में हुई, जो आज अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के तौर पर जाना जाता है। शुरू से ही अंग्रेज, मुस्लिम टीचर और मुस्लिम मित्रों के बीच रहने से राजा की सोच इंटरनेशनल हो गई। उनके अंदर क्रांति की लहरें हिलोरे मारने लगी।

1905 के स्वदेशी आंदोलन से वो इतना प्रभावित हुए कि अपने ससुर के मना करने के बावजूद वो 1906 के कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में हिस्सा लेने चले गए।

1909 में वृन्दावन में प्रेम महाविद्यालय की स्थापना की जो तकनीकी शिक्षा के लिए भारत में प्रथम केन्द्र था। मदनमोहन मालवीय इसके उद्घाटन समारोह में उपस्थित

रहे। ट्रस्ट का निर्माण हुआ–अपने पांच गाँव, वृन्दावन का राजमहल और चल संपत्ति का दान दिया।

उनकी दृष्टि विशाल थी। वे जाति, वर्ग, रंग, देश आदि के द्वारा मानवता को विभक्त करना घोर अन्याय, पाप और अत्याचार मानते थे। ब्राह्मण–भंगी को भेद बुद्धि से देखने के पक्ष में नहीं थे। वृन्दावन में ही एक विशाल फलवाले उद्यान को जो 80 एकड़ में था, 1911 में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को दान में दे दिया। जिसमें आर्य समाज गुरुकुल है और राष्ट्रीय विश्वविद्यालय भी है।

प्रथम विश्वयुद्ध से लाभ उठाकर भारत को आजादी दिलवाने के पक्के इरादे से वे विदेश गये। इसके पहले "निर्बल सेवक" समाचार–पत्र देहरादून से राजा साहेब निकालते थे। उसमें जर्मन के पक्ष में लिखे लेख के कारण उन पर 500 रुपये का दण्ड किया गया जिसे उन्होंने भर तो दिया लेकिन देश को आजाद कराने की उनकी इच्छा प्रबलतम हो गई। विदेश जाने के लिए पासपोर्ट नहीं मिला। मैसर्स थौमस कुक एण्ड संस के मालिक बिना पासपोर्ट के अपनी कम्पनी के पी. एण्ड ओ स्टीमर द्वारा इंगलैण्ड राजा महेन्द्र प्रताप और स्वामी श्रद्धानंद के ज्येष्ठ पुत्र हरिचंद्र को ले गया। उसके बाद जर्मनी के शासक कैसर से भेंट की। उन्हें आजादी में हर संभव सहाय देने का वचन दिया। वहाँ से वह अफगानिस्तान गये। बुडापेस्ट, बुल्गारिया, टर्की होकर हैरत पहुँचे। अफगान के बादशाह से मुलाकात की और वहीं से 1 दिसम्बर 1915 में काबुल से भारत के लिए अस्थाई सरकार की घोषणा की जिसके राष्ट्रपति स्वयं तथा प्रधानमंत्री मौलाना बरकतुल्ला खाँ बने। स्वर्ण–पट्टी पर लिखा सूचनापत्र रूस भेजा गया। अफगानिस्तान ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया तभी वे रूस गये और लेनिन से मिले। परंतु लेनिन ने कोई सहायता नहीं की। 1920 से 1946 तक विदेशों में भ्रमण करते रहे। विश्व मैत्री संघ की स्थापना की। 1946 में भारत लौटे। सरदार पटेल की बेटी मणिबेन उनको लेने कलकत्ता हवाई अड्डे गईं। वे संसद–सदस्य भी रहे।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इंग्लैंड में लेवर पार्टी की सरकार आई, जो काफी दिनों से भारत से ब्रिटिश हुकूमत हटाने के पक्ष में थी। इंग्लैंड सरकार ने सारे भारतीय बंदियों को रिहा कर दिया ,14 फरवरी 1946 ई. को अमेरिकी त्यौहार के अवसर पर अमेरिकी सरकार ने राजा महेंद्र प्रताप ठेनुआ जी को सुगानो जेल से रिहा कर दिया ।

राजा साहब वहां से जापान स्थित अपने आवास पहुँचकर अपने कार्यो में जुट गए।एक दिन एक अंग्रेज अफसर राजा साहब के पास पहुँचा भारतीय गवर्नर जनरल का लिखा खत लेकर जिसमे लिखा था कि ब्रिटिश सरकार ने आपके खिलाफ दर्ज सभी मुकदमे वापस ले लिए है ।आप कभी भी भारत आ सकते है ।

राजा साहब टोक्यो स्थित ब्रिटिश दूतावास गये बीजा प्राप्त किया 9 अगस्त 1946 ई.को लगभग 32 वर्षो का देश निकाला समाप्त करके वापस भारत लौटे । मद्रास पोर्ट पर उन्हें सरदार वल्लभ भाई पटेल अपनी कार में बैठा कर वर्धा ले गए उनकी पुत्री कार चला रही थी।

वृंदावन पहुँचकर उन्होंने अपना पहला भाषण दिया कि जब एक भारतीय नौजवान इंग्लैंड में जाकर भरी सभा में डायर को गोलियों से भून सकता है तो अंग्रेज यहाँ कैसे राज कर सकते है।24 घण्टे में चौधरी छोटूराम की चेतावनी के बाद जिन्नाह पंजाब से भाग सकता है तो मुस्लिम लीग पाकिस्तान कैसे बनवा सकती है ।राजा साहब का नारा था षदिल्ली पकड़ो आगे बढ़ो आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है

सन 1956 ई.के चुनावो में राजा साहब ने मथुरा लोकसभा के चुनाव में जनसंघ के अटल बिहारी बाजपेयी की जमानत जब्त करा दी थी ,व् उस वक्त के जाट नेता दिगम्बर सिंह जो कांग्रेस से मैदान में थे उनको भी हरा दिया था ।राजा साहब ने देश और कौम के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था ।

29 अप्रैल 1979 को महान पुरख दुनिया को अलविदा कह गए। मार्च 2021 में उत्तर प्रदेश सरकार ने उनके नाम पर अलीगढ़ में एक विश्वविद्यालय स्थापित करने की घोषणा की।यह विश्वविद्यालय अब शिक्षण कार्य कार्य करना आरम्भ कर चुका है। यह अलीगढ़ के पलवल रोड, लोधा में स्थित है।

ऐसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, क्रातिंकारी, पत्रकार, शिक्षाविद्ध, लेखक, समाज सुधारक और महान दानवीर को उनकी पुनः तिथि 29 अप्रैल पर कोटि–कोटि नमन करते है।

DETAIL OF DONATION RECEIVED FOR CONSTRUCTION OF CH. CHHOTU RAM YATRI NIWAS KATRA-JAMMU

Sh. Anand Singh # 1378, Sector 21, Panchkula	**2100.00**
Sh. Mahabir Singh # 516, Sector 12-A, Panchkula.	**2100.00**
Sh. Pritam Singh Sheokand # 778, Sector 27, Panchkula.	**2100.00**
Sh. Ramphal Nain # 671, Sector 21, Panchkula.	**2100.00**
Sh. Naresh Dahiya # 903, Sector 23, Panchkula.	**2100.00**

चौ. गुरनाम सिंह, आईएफएस (सेवानिवृत), पूर्व अध्यक्ष एवं संरक्षक, जाट सभा

01.05.2023 को पुनः तिथि पर शत्-शत् नमन

– सतीश कुमार बाजड़, (मो० 9417579855)

स्व. चौ. गुरनाम सिंह का जन्म 09 मार्च 1937 को गांव फतेहगढ़ तुम्बी, तहसील बिलासपुर, जिला यमुनानगर (हरियाणा) में एक साधारण किसान परिवार में हुआ। इनकी माता जी श्रीमति करेसनी देवी अत्यंत धार्मिक प्रवृति की धनी थी और पिता जी चौ. हमेल सिंह परिश्रमी किसान थे। चौ. साहब मात्र पांच वर्ष के थे जब इनकी माता जी का निधन हो गया। इस प्रकार संयुक्त परिवार में बिना मां के आंचल से उनका बचपन गुजरा।

चौ. साहब आरंभ से ही एक मेधावी व होनहार विद्यार्थी रहे और पांचवी की बोर्ड की परीक्षा के बाद से ही उनकी छात्रवृति शुरू हो गई थी। उन्होंने आठवीं क्लास की परीक्षा गांव के मिडल स्कूल से पास की और मैट्रिक की परीक्षा हिंदु एग्लो संस्कृत हाई स्कूल साढौरा से मैरिट सूची में स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। तत्पश्चात एस ऐ जैन कालेज अंबाला शहर से बीएससी की परीक्षा पास करने के बाद पंजाब सर्विस सलैक्शन बोर्ड, पटियाला से प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करके भारतीय वन सेवा में प्रवेश प्राप्त किया। चौ. साहब ने भारतीय वन सेवा की लिखित परीक्षा उच्च स्तर से उत्तीर्ण करने के साथ शारीरिक परीक्षा यानी 25 मील की दौड़ में भी प्रथम स्थान प्राप्त किया था और वन सेवा का प्रोबेशन पीरियड संयुक्त पंजाब के कुल्लु डिवीजन में पूरा किया। हरियाणा गठन के पश्चात उनकी पहली पोस्टिंग महेंद्रगढ़ में बतौर वन मण्डल अधिकारी हुई। अपनी मेहनत व लगनशीलता के बलबूते लगातार पदोन्नति प्राप्त करके प्रधान मुख्य वन पाल के पद पर आसीन हुये और सेवानिवृति तक 20 वर्ष से अधिक समय तक वन विभाग हरियाणा के विभाग अध्यक्ष रहे।

चौ. साहब की गणना हरियाणा प्रदेश में एक दबंग, ईमानदार व स्वच्छ छवि के अधिकारी के तौर पर आंकी गई है जिन्होंने अपनी समस्त सर्विस के दौरान कभी भी अपने सिद्धांतों व स्पष्टवादी छवि/स्वाभिमान से समझौता नहीं किया। एक बार प्रदेश सरकार ने जब वन विभाग की कार्यशाली में हस्तक्षेप कर प्रशासनिक फेरबदल कर उनको प्रधान मुख्य वन पाल के पद से पदहस्त करने की कोशिश की तो अपने केस की खुद पैरवी करके सर्वोच्च न्यायालय तक अपने हक के लिये लड़ाई लड़ी और विभाग के सर्वोच्च अधिकारी के विरूद्ध "दुर्भावना पूर्ण इरादा" के आरोप साबित होने पर प्रदेश सरकार को सर्वोच्च न्यायालय में हल्फनामा दायर कर चौ. साहब के विरूद्ध दायर केस को वापस लेना पड़ा। सर्विस के दौरान ही उन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से प्रथम श्रेणी में एल.एल.बी. उत्तीर्ण की और रिटायरमेंट के पश्चात कुछ समय तक पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में वकालत भी की। स्व. चौ. बंसीलाल की सरकार के दौरान उनको प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, हरियाणा का चेयरमैन नियुक्त किया गया। चौ. साहब का 10 वर्ष की आयु में विवाह कर दिया गया और 5 साल बाद यानि 15 वर्ष की अवस्था में मकलावा (पूर्ण विवाह) कर दिया, लेकिन जिनके इरादे व लगन मजबूत होती है वे अवश्य मंजिल प्राप्त कर लेते हैं। चौ. साहब के तीन विवाहित बेटे हैं। उनका बड़ा बेटा मुंबई में एक प्रतिष्ठित मल्टी नेशनल कंपनी में प्रबंधकीय अधिकारी है। मंझले पुत्र का अपना इलैक्ट्रीकल सामान का व्यवसाय है और छोटा बेटा पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट में वकालत करता है।

एक कुशल अधिकारी के साथ–साथ चौ. साहब सामाजिक कार्यों में भी बढ़–चढ़ कर भाग लेते थे। वे 25.11.1988 से 23.06.1996 तक जाट सभा चंडीगढ़ व पंचकूला के अध्यक्ष रहे और तत्पश्चात अन्त तक जाट सभा से संरक्षक के तौर पर जुड़े रहे। जाट भवन चंडीगढ़ व पंचकूला के लिये प्लाट अलाटमैंट में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इनके प्रयास से वर्ष 1990 में जाट भवन चंडीगढ़ के प्लांट की अलाटमैंट हुई थी लेकिन बाद में 25 प्रतिशत राशि जमा कराने के बावजूद चंडीगढ़ प्रशासन द्वारा तकनीकी इतराज लगाकर मध्य मार्ग की बजाये चंडीगढ़ में सैक्टर–34 में छोटा प्लांट देने की पेशकस की गई। तत्पश्चात चौ. साहब ने चंडीगढ़ प्रशासन के तत्कालीन प्रशासक एवं पंजाब के राज्यपाल महोदय श्री विरेन्द्र वर्मा से मुलाकात करके उनसे अनुरोध किया और जाट भवन चंडीगढ़ का मध्य मार्ग पर जनवरी 1991 में स्वामित्व मिला। चौ. साहब ने भवन निर्माण के शुरूआती दौर में भवन निर्माण के लिये अनुदान एकत्रित करने के साथ–साथ जाट सभा की विभिन्न गतिविधियों के संचालन में सदैव सहयोग प्रदान किया। उनकी यह दिली इच्छा थी उनके कार्यकाल में शुरू हुआ भवन निर्माण का कार्य जल्दी पूरा हो सके, इसलिये उन्होंने वर्ष 1996 में चुनाव के दौरान स्वेच्छा से अध्यक्ष पद की जिम्मेवारी से अलग होते हुये कहा था कि मैं अपने से भी योग्य व दबंग अधिकारी डा. एम एस मलिक, आईपीएस को जाट सभा का अध्यक्ष पद सौंप रहा हूं जो भवन निर्माण पूरा करने के अलावा जाट सभा को एक मुकाम तक ले जायेंगे।

एक ईमानदार व स्वच्छ छवि के अधिकारी के अलावा चौ. साहब की सादगी पूर्ण व बेदाग जीवन शैली रही है। वे सदैव "ना काहु से दोस्ती, ना काहु से बैर" की विचारधारा के पालन हार रहे। उनका मानना था कि इस सादगी पूर्ण सौहार्दपूर्ण नीति पर चलकर ही व्यक्ति संतोषजनक व तनाव रहित जीवन व्यतीत कर सकता है। दूसरों को मित्र बनाने व सम्मान देने की भी उनमें विशेष खूबी थी। वे मेरे स्व. पिता जी के अति मिलनसार व नजदीकी मित्र रहे हैं। जाट भवन चंडीगढ़ के निर्माण का कार्य शुरू होते ही उन्होंने पेशकस की थी कि भवन निर्माण का कार्य सूबेदार बलबीर सिंह मलिक की देखरेख में किया जायेगा। चौ. साहब लंबे समय तक अस्वस्थ रहने के कारण बीमार हो गये और 01 मई 2018 को अपनी जीवन यात्रा पूरी करके प्रभु चरणों में विलीन हो गये। उनके स्पष्टवादी व पारदर्शी व्यक्तित्व पर हमें हमेशा नाज रहेगा।

माँ का ये रूप भी होता है

– सुखदीप सांगवान

माँ ही है जो आँखों से भी डरा सकती है,
पढ़ो ना तो गाल को लाल बना सकती है,
बिन बोले अपने इशारों से नचा सकती है,
बेझिझक आपको शनिकम्माश बता सकती है,
'तुम पैदा ही ना हुए होते तो अच्छा था',
'मोहल्ले का हर बच्चा तुमसे अच्छा था,
'मेरे फूटे थे कर्म जो तुम जैसी सन्तान मिली,
'ना सुख दिया ना ही चैन की साँस मिली'
हम सब ने माँ के ऐसे रूप को भाँपा हैं,
पर क्या इस रूप में छिपे दर्द को नापा है,
ममत्व की बेबसी की झलक थी जिसमें,
आपके उज्जवल भविष्य की ललक थी जिसमें,
उसकी डाँट–डपट में एक छटपटाहट थी,
उसमे आपकी सफलता की चाहत थी,
अदृश्य प्रेम छुपा कर वो डाँट तो देती थी,
चंद ही पलों में फिर माथा चूम लेती थी,
माँ जैसा प्यार कोई दे ही नहीं सकता,
वैसा दुलार कोई दौलत से भी ले नहीं सकता,
अब तरसते हैं उसकी उस क्रोधित सी मुद्रा को,
उस अटूट प्यार और उसकी सहिष्णुता को,
अब आंखें उसकी याद में डबडबा जाती हैं,
बचपन की यादें अक्सर रुला जाती हैं,
काश भगवान ऐसा कुछ कर सकता,
इंसान माँ से बात, उसके जाने के बाद भी कर सकता!!!

Khap Panchayat Divas - 14th May 2026

Suraj Bhan Dahiya, Mob.: 9818120950

Jat community has a very long and complex history of internal struggles for freedom and political reform. Its history is full of layers of uncertainty and ambiguity. Where the community is standing today? And how the viral race can claim its lost glory in the present scenario is my concern? History, may I think, stand a good stead here. Meaningful and lasting political change in the community can only come from within society. The latent strength of the society has been its divine functioning through Khap panchayat Institution. The head of Institutions 'Chaudhry' has sway over politician which inherits the power with the faith of people in Khap panchayats. Khap panchayat in the Jat land continue to make news with their belligerent stand for what some people call their archaic code of honour and 'retrograde thinking'. The panchayats, however, refuse to buy the argument. They have served their people for thousands of years, they say, and are still useful in many ways.

D.R. Chaudhry, a Marxist ideologue in his book "Khap panchayat and Modern Age" reveals that "Khap" is an Urdu word meaning "branch" which is used to delineate different branches of a particular caste using "gotra" as a basis. Another view treats "Khap" as a distorted form of the Hindi word "Khep" - unit. And according to Bhim Singh Dahiya the word Khap is perhaps derived from the Saka word "Strap" or "Khatrapy" and means an area inhabited by a particular clan. So far as I am concerned, the word "Khap" stems from the Sanskrit word Kshatrapa (Kshatrapa Khatrapa Khapa), which means upashaska (deputy administrator). In local dialect, it connects with the word "Khapa"- a raised level meaning thereby that Khap institution is highly honoured platform having divine status among the people.

The Jat land villages have always been, what Sir George Campbell on authority on the subject, aptly calls Khaps - "tributary republics" throughout their long history. These village panchayats... comprising, in Sir Percival Spear's words, "rustic philosophers" chosen by the villagers themselves took care of the common affairs of the villagers.

The people's own creation which helped them live securely, this dispensation worked creditably, resiliently withstanding the onslaughts of nature and man through ages.

Sir John Lawrence, who had pretty intimate knowledge of Jatland villages, has explained the truth very aptly in his classic assessment of 1844 (At no other place) the ancient village communities are, he says "in such excellent preservation (as in the Jat Land territory) or where the practice of our civil courts, has done so little harm — Bound together by the ties of blood connection and above all, common interest like the bundle of sticks — They are difficult to break.

Sir John's countryman Thomas Fortescue, a seasoned bureaucrat of almost the same time and standing elegantly described their functioning on the principle of justice, equality and...fair play. "Injustice or partiality are not charged to these tribunals" he says "and it is no weak proof in their favour that we found a perfect equality amongst the people in rank and fortune."

Small wonder then we see as hinted above the church and the state whatever their nature try to interfere in the affairs of our villages. Even the good Mughals kept away. And surprise of surprises even the British based their civil legal system to a large extent not on the modern tenets of the shastra and sharia but on their (clan's) laws-customs, codified as wajib-ul-wiz (village customs) and Riwaj-i-Am (general district level customs). So to say Metcalfe, a well-known British Administrator, has put this on record or Khap panchayat seem to last where nothing else lasts. Dynasty after dynasty tumbles down, revolution succeeds revolution, Hindu, Mughal, Maratha, Sikh, English are masters in turn but the village republics - Khap bodies remain the same in the Jat Land.

How one might ask these organizations could stand and survive the way they did over centuries? The answer is with the Khap bhaicharas (brotherhood) which regulated their every matter, social, economic, political. Bhaichara was actually atman (soul) of the village body. And it is unfortunately the root of problem we are facing today. The spirit of bhaichara it must however be pointed out was not uniformly the same in all villages. Thanks to the varying nature of their founding histories and social - cultural composition and needs and not so assertive at some places. Most of the Jat villages fell in the first category, and others in the second.

It is very regrettable that D.R.Chaudhry in his book portrayed the Khap Panchayat in bad taste. Ajay Sinha - a film maker was not made a film titled 'Khap' which on Khap philosophy. The film was not screened. Actually most of the media hands are ignorant about Khaps and their activities. Majority of the jat intelligentsia with left leanings who are ignorant about Jat Land culture are in collusion with the media and the media dares to 'describe the Khap institution as Kaph'. I tried to present the spirit of Khap panchayats in my two articles dated 15th and 16th July 2001 in Dainik Bhaskar national daily newspaper for the first time. The bhadralok approach to development evident not only in India but also most developing countries assumes that the educated elite knows the best what is good for the illiterate masses. The Khap dictum "We the people" epitomises the conviction of the elites that they must think and plan on behalf of communities who are primitive and unskilled to think and plan for themselves. We never imposed confidence in the Khap set up and top-down planning has been imposed upon. Overall, it has been a big failure.

Sociologists like Robert Putnam have demonstrated that enormous economic benefits flow from social capital. Francis Fukuyama (of the End of History fame) has written a book on the importance of trust created by social capital.

Paradoxically, we always seek opportunity to discourage the Khap Panchayat. High levels of trust greatly reduces risks and costs and so encourages enterprise and innovation. Social Capital ultimately translates into Financial Capital. The Khap Panchayat possesses great Social Capital and they generate financial capital for the welfare of rural masses. We, therefore, should be far enough not to try and substitute Social Capital with central bureaucracy or top-down planning. Social Capital in the shape of Khaps will do wonders if it is harnessed in a fair way.

M.C. Pradhan's thesis is probably the earliest research work on Khap Panchayat and my book 'Dahiya Simitri' is the first attempt on Khap Panchayat which has been widely appreciated.

Maharaja Harshavardhana has recognised the contribution of the Khap Institution and he honoured the Khap Appasandus at an official function in Thanesar. A copper seal excavated in Sonipat revealed that Queen Yashomati gave birth to Harsha in 590 AD on Dwadashi Krishna Paksha in the month of Jeth. Accordingly, his birth anniversary falls on 14th May. King Khap Day. From time immemorial Jat land people have been practising community synthesis through Khap Panchayat. The Khaps have experienced many ups and downs during the course of history.

This institution has played a useful and meaningful role in history at different junctures of time. The Khaps played a heroic role during the Uprising of 1857 and the people suffered serious consequences including torturous deaths. No institution can rest contented on its past laurels alone. Its effectiveness, utility and relevance have to be judged by its role in the context of the present age. Judged by this yardstick, the institution of Khaps is struck with several failings which should lead its followers and ideologues for deep introspection and appraisal and evolve a strategy to make it relevant in the changed circumstances. Therefore, the Jats intellectually cannot escape from the responsibility of tomorrow by evading today. Let us vow to transform the Khap body - a viable organ to reclaim our past glory.

Every social institution undergoes changes with the passage of time. If an attempt is aimed at keeping the institution congealed and arrested in time by sticking to its age-old traditions, conventional customs by ignoring the pull of the present. It is bound to suffer from serious infirmities, inaugurates and distortions. The Chaudhari should work hard to set up Khaps study institution for the present needs and the age old organ should be run on modern lines. We must have dedication for this transformation.

Limitations in the diversion of flow from three rivers of J&K

- Ch.Sompal Shastri and R.N. Malik

On the fateful day of 22 April 2025, a group of terrorists from Pakistan crossed the border and reached Pahalgam in Jammu and Kashmir and resorted to indiscriminate firing, resulting in the deaths of 26 Indian tourists. Consequently, the whole nation was shocked and clamoured for revenge.The Government of India too reacted strongly. Besides conducting Operation Sindoor, it urgently suspended the Indus Waters Treaty (IWT) with Pakistan. The Union Home Minister, Sh. Amit Shah, further declared that not a drop of water from the three upper rivers of Indus basin (Indus, Jhelum and Chenab) would be allowed to flow towards Pakistan.

The total annual flow of six rivers (Indus, Jhelum, Chenab, Ravi, Beas and Satluj) has been assessed to be 170 million acre feet (MAF) and the flow gathered for these six rivers from the Indian territory is around 123.0 MAF. The total annual run-off of three lower or Punjab rivers (Ravi, Beas and Satluj) is estimated to be 33 MAF. Before the Partition, a part of the flow of the three Punjab rivers was shared by some districts of Pakistan. Consequently, after Partition.(15.8.1947), an accord was reached between the two countries on May 8,1948, that allowed Pakistan to utilise the flow as before till a final accord was reached for the distribution of waters of all the.six rivers.

After lot of haggling for eight years under the auspices of the World Bank, the Indus Waters Treaty was drafted and signed by the two.countries on 19 September 1960. According to the Treaty, flow of 33 MAF of the three Punjab rivers (Ravi, Beas and Satluj) was allotted to.India for her exclusive use and the flow of 90 MAF of three upper rivers (Indus, Jhelum and Chenab) was allotted to Pakistan for exclusive use for various uses. Besides, 1.5 MAF water from Chenab river could be used for.irrigation of lands in the Jammu region. However, India could utilise the waters of the three rivers for hydropower development with the help of run-of-the-river projects.

On paper, the Treaty looked to be a total sellout to Pakistan but it was not so as believed in practical terms. This is because India could use only a limited quantity of flow from river Chenab in view of the unfavorable topographical conditions prevailing in the J&K.region. Pakistan too could not utilise the flood water of Chenab fully as the site for building a storage reservoir did not exist in her territory and the excess flood water (around 12-14 MAF) still.flows to the Arabian Sea unutilised.

Moreover, the reservoir at the Tarbela dam across the Indus in Pakistan too is unable to store the entire flow of the Indus because of a very high peak flow of around 20 lakh cusecs during the rainy season and a substantial part has to be spilled over few times causing floods in the downstream side. Secondly, water of both the Jhelum and Chenab rivers contains a high concentration of silt. As a result, the proposed storage reservoirs across the two rivers run the risk of heavy siltation and consequent reduction in the storage capacities in the two reservoirs in the long run. Pakistan is facing this problem in the two reservoirs of Mangla and Tarbela dams across Jhelum and Indus rivers respectively.

Thirdly, an adequate storage space is not available in the valleys of the three upper rivers on the Indian side because of their narrowness. For example, total storage space created by the 143 m high Baglihar dam across Chenab is only 0.4 billion cubic metres (bmc) as.against the 7.3 bmc storage capacity of the 165m high Bhakra Dam reservoir. Fourthly, diversion of waters of the Indus and the Jhelum rivers to river Chenab requires very long and spacious tunnels to carry an annual flow of 67 MAF (45 MAF from the Indus and 22 MAF from the Jhelum). The tunnel length between Indus and Chenab river at Akhnoor barrage is around 280km and between Jhelum and Chenab rivers is 110km. Construction of such long and big tunnels across high and freezing mountainous reaches is definitely an herculean task. Besides, the length of the open lined channel carrying combined flow between Chenab and Beas rivers will be around 145km. Therefore, considering the grave difficulties and the economy of scale, the term "utilisable water" was mentioned in the Treaty referring to the limitations of flow utilisation of the three rivers and possibly, the then government of India agreed to the provisions of the Indus Water Treaty of 1960 in view of the aforesaid limitations. Still, the engineers of the Central Irrigation and Power Commission should have advised the government to insist for a fair share in the flow of river Chenab as well.

Both the Home Minister Amit Shah and the Jal Shakti Minister C.R.Patil have stated a few times that the Jal Shakti Ministry had been tasked with the preparation of the Feasibility Report for the proposed mega project for diversion of total flow of the three upper rivers to river Beas for further utilisation in Haryana, Punjab, Rajasthan and Gujrat states. But one year has passed and nothing has been heard so far about the progress and the technical details of the proposed mega project. However, some scanty reports appeared in the media last year that initially a long open channel of nearly 145km length will be built to transfer the flow of Chenab river to river Beas for further utilisation in the Punjab and Haryana States. But strangely, there was no mention of building a storage reservoir across Chenab river for storing the flood waters to.ensure a regular flow round the year.

The aforesaid limitations indicate that the diversion of the entire flow of 90 MAF from the three upper rivers to river Beas is not possible though the possibility of diversion of partial or dry weather flow exists considering the cost-benefit ratio of the project.

Incidentally, the Home Minister Amit Shah and External Affairs Minister S. Jaishankar have stated a few times that the Indus Water Treaty would remain in suspended animation till Pakistan stops cross-border terrorism completely. This bland statement creates some confusion. Suppose, Pakistan genuinely stops the cross- border terrorism; then will the Government of India revive the Treaty and allow the water of the three upper rivers to flow towards Pakistani or will re-negotiate the Treaty to India's advantage. This confusion too needs to be cleared quickly. However, it may be mentioned that suspension of the Treaty has given a filip to the early completion of half a dozen upcoming hydropower projects across river Chenab and Jhelum as the country no longer requires to seek approval of design and drawings from the Pakistani.engineers as per provision in the Treaty. The condition of seeking concurrence on design of the dams from Pakistan engineers delayed the construction work of the hydropower projects at least by three years in the past.

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Boy (13.12.1998) /6 feet . B.A., M.A. from Maharshi Dayanand University."Currently working with IDFC FIRST Bank at Gohana, Sonipat. Father was a Government Employee and is no longer with us. Mother is a homemaker and receives family pension. One brother is working in a private job. Family owns 5 Kille agricultural land. Avoid Gotra: Gill, Siwach, Ahlawat. Cont.: 9812919970
- SM4 Jat Boy Divorced Jat Boy (25-02-1991)34/6 Feet. Graduate from Panjab University. Self-employed in Chandigarh, managing family Book-Shop business. Annual Income: 15–20 Lacs. Own residence and commercial shops in Chandigarh. Father is a businessman (Book-Shop). Mother is a homemaker. Younger sister is working with Air India. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sahrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 29.09.91) 34/5'8" PhD Structural Engineering JRF and six time gate qualified worked as Guest facility at DCRUST murthal but not now. Preparing HPSC posts father Mahipal Gill Associate Prof of Physics (Retd) Jat Collage Rohtak, mother Principal (Retd) Grand mother Head teacher (Retd) & One younger Brother P MSc. Two plots 107 yds Native Village Kharenti, Rohtak. Avoid Gotras: Gill Dahiya. Gahlwat Direct Khrab. Cont.: 9416193949, 9991806472
- SM4 Jat Girl (12.04.1997), Height: 5'3". Bachelor of Audiology & Speech Language Pathology, Master's in Speech Language Pathology. Currently pursuing Ph.D. in Adult Language Disorders from Sri Ramachandra Institute of Higher Education and Research. Registered Speech & Hearing Practitioner and professionally practicing in the field.Unmarried. Family settled in Rohtak. Avoid Gotra: Malik, Dahiya, Solanki. Cont.: 9729215127
- SM4 Jat Girl (29.11.1994) 31/ 5'7" B.Sc. and M.A. Economics from MCM DAV College for Women. Working as Cabin Executive (CE) with Air India. Annual Package: 13 LPA. Father owns a Book Shop business. Mother is a homemaker. Family owns residence and commercial shop in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sahrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Girl (DOB 08.03.96) 30/5'4.5" BAMS, Pursuing MS OBS & Gynae. Father retired from Indian Army. Brother Major (Doctor) in Indian Army. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Preferred Doctor/ Class-I officer. Avoid Gotras: Barak, Gulia, Rathee. Contact: 8329554190
- SM4 Jat Girl (DOB 15.02.98) 28/5'5" M.A. English from PU, Computer Diploma, B.Ed., CET qualified. Working in Mohali. Father retired Superintendent Haryana Government. Preferred match Tricity. Family settled at Zirkpur (Punjab). Avoid Gotras: Dahiya, Balyan. Contact: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 27.08.2000) 25/5'4" M.Sc. Math., B.Ed. CET 2025 qualified. Father Sub Inspector in Haryana Roadways. Mother House wife. Avoid Gotras: Chahal, Sehrawat, Malik. Contact: 9416674447
- SM4 Jat Girl (DOB 08.01.88) 37/5'3" BCA, MCA, B.Ed., Working as IB Educator in Heritage International School Gurugram. 6 yrs experience with Edubridge International School Mumbai & Heritage International School Gurugram. Avoid Gotras: Gandas, Sehrawat, Lohchab. Contact: 9868835193
- SM4 Jat Girl (DOB 01.11.98) 27 5'5" B.Com. M.Com (Psychology), B.Ed., CTET qualified. Working in government office in Chd. Father retired Under Secretary from Haryana Civil Secretariat. Avoid Gotras: Nehra, Rathi, Hooda, Duhan. Contact: 9417347896, 9878687264
- SM4 Jat Girl (DOB 20.12.96) 29 5'4" M.S. (Surgery). College topper P.A.Medical College Haridwar. B.A.M.S AYUSH University Kurukshetra. Working as Assistant Professor at COER University Roorkee (Uttrakhand). Father S.I. PS Barwala, Hisar. Mother housewife. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Jakhar, Sihag, Nain. Contact: 8307986833
- SM4 Jat Girl (DOB 01.05.94) 31/5'2" M.A. English from Punjab University. JBT. B.Ed. from Punjab University. CTET-TGT. HTET-JBT. Four times, HTET-PGT. Twice, TET-JBT. Twice. Working as Government primary teacher in Punjab. Father Deputy Manager in HMT. Pinjore. Mother housewife. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Pilania. Contact: 9416869289
- SM4 Jat Girl (DOB 09.06.96) 29 5 feet B.Sc. Nursing from LLRM Medical College, Meerut. Employed as Nursing Officer at Banaras Hindu University Banaras. Income Rs. 10-15 LPA. Contact: 9760874881
- SM4 Jat Girl (DOB 25.09.98) 27/5'5" MA. Pursuing Diploma in Cyber Security from GJUS Hisar. Steno in Hindi & English. Training CTI (Steno Instructor) in ITI Jaipur. Father retired from Army and now in Government job. Avoid Gotras: Moond, Nain, Rabiya. Contact: 9467746241.
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.95) 30/5'6" B.Com Maharaja College Jaipur. M. Com (Economics, Administration & Financial Management) from University of Rajasthan. Father Hony. Captain in Army. Mother housewife. Avoid Gotras: Dudhwal, Dhaka, Burdak, Bajiya. Contact: 9549901996
- SM4 Jat Girl (DOB 1999) Height 5 feet. B. A. Statistics M. A. Economics. Working as DEO in CTU Chandigarh on contract basis. Income Rs. 3.60 LPA. Avoid Gotras: Bamal, Malik, Kaliraman. Contact: 9815109960
- SM4 Jat Girl (DOB April 1998) 27/5'7". B.Sc. Medical. Employed as Constable in Haryana Police. Father expired. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Nain, Malik, Dhull. Contact: 9468407521
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 27/. B.Sc. Nursing, PGIMER. Employed in PGI Chandigarh. Father Inspector retired from Haryana Police. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga. Contact: 9468407521
- SM4 Jat Girl (DOB 06.11.94) 31/. B. A. Kurukshetra University. M.Sc. Geography from GJUS Hisar. B.Ed. from CRSU Jind. Father ex-service man and now working in UCO Bank. Family settled at Hisar. Avoid Gotras: Chahar, Saharan, Duhan. Contact: 9068616400, 9467426435
- SM4 Jat Girl (DOB 15.06.2000) 25/5'6" B.A. from Miranda House University of Delhi. M. A. Economics from IJNU. Bachelor of Education from Greenwood College of Education. CTET passed. Father retired from Army, now employed in SBI. Bank. Family settled at Karnal. Avoid Gotras: Kaliramana, Banger, Mathur. Contact: 9466942154 9467426435
- SM4 Jat Girl (DOB 06.02.93) 33/5'3" B.A. B.Ed. M.A. Punjab University. Working as teacher in a private school at Mohali. Father retired Inspector from Chandigarh Police and Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Contact: 8699726944, 7837908258
- SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 31/5'7" B.Sc., & M.A. Economics from DAV College Chandigarh. Working as Cabin Executive in Air India. Father's

own Business (Book shop). Mother housewife. Own residence in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Contact: 9988407607

- SM4 Jat Girl (DOB 27.09.96) 29/5'4" M.A., B.Ed. Employed as Constable in Chandigarh Police. Father farmer. Avoid Gotras: Saharan, Malik, Khunga. Contact: 9813528523
- SM4 Jat Girl (DOB 04.03.2000) 25/ B.Sc. Physics (Hons.), B.Ed. Working Ministry of Housing & Urban Affairs (GOI) as L.D.C. Father business. Mother Govt Teacher. Family settled at Rajpura (Punjab). Avoid Gotras: Lamba, Tomar. Contact: 9316440789, 9316253179
- SM4 Jat Girl (DOB 01.10.91) 34 B.Sc. Hons. Biotechnology. Working as Science Teacher in reputed private school. Father (late.) Agriculture Extension Officer. Mother housewife. Family settled at Rajgarh (H.P.) Preference Government job in Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Ahlawat, Rathi, Balyan. Contact: 8627912782, 9816414984.
- SM4 Jat Girl (DOB 28.09.98) 27/5'3" Bachelor of Engineering. Working as I.T. Software Engineer in a reputed MNC (T.C.S.) at Indore. Avoid Gotras: Sangwan, Rathi, Nandal. Contact: 9303068646
- SM4 Jat Girl (DOB 26.10.96) 29/5'2" MBBS, BPS from Govt. Medical College Sonepat. DNB medicine from MAMC Agroha. Doing SR ship at GMCH Sector 32 Chandigarh. Father late Ex-serviceman & retired Inspector from Haryana Roadways. Mother ANM in NHM. Preferred MD/MS/DNB or first class officer. Family settled at Kalka, Pinjore. Avoid Gotras: Narwal, Nain, Dhanda. Contact: 9034240791
- SM4 Divorced Jat Girl (DOB 10.02.91) 34/5'2" MBA, HR management from GJU Hisar. B. Tech. (CSE) from K.U.K. affiliated University. Package Rs. 8 LPA. Father retired. Family settled at Bhiwani. Avoid Gotras: Kasania, Beniwal. Contact: 9416921521, 9205756432
- SM4 Jat Girl (DOB 01.09.96) 29/5'3" M. Com. from P.U. Chandigarh. UGC, NET Commerce qualified. Father's Jewelry business. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Dagar, Dhull. Contact: 9896290431
- SM4 Jat Girl (DOB 28.02.93) 31/5feet. B. Tech. in Computer Science, M. Tech. in Software Engineering. Working in reputed MNC at Chandigarh. Salary Rs. 8 LPA. Father retired Divisional Head Draftsman from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal, Sheoran. Contact: 9417333298
- SM4 Jat Boy (DOB 10.10.97) 28/170. B.A. Manager in Aditya Birla Group. Avoid Gotras: Darall, Solanki, Dahiya. Contact: 9467386368
- SM4 Jat Boy (DOB 05.12.91) 34/6'1" B. Tech. Electrical. LLB Hons. Practicing as Advocate in District Court Rohtak. Father Pharmacy Officer Retired. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Hooda, Rathee, Sangwan. Contact: 9416517438, 9466126438
- SM4 Jat Boy (DOB 13.02.99) 27/5'7" B.A. LLB. Advocate. Father Businessman. Mother Senior Nursing Officer in Ambedkar Govt Rohini Delhi. Avoid Gotras: Dahiya, Rathee, Sangroha. Contact: 9560344388
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 28/6 feet. B. Tech. CS. MBA. Software Engineer. Permanent work from home. Package Rs. 25 LPA. Own Coaching Institute--Banakura Classes. Agriculture land 4.5 acre. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bankura, Maan. Contact: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 13.12.96) 29/5'7" Employed as Excise Inspector GST Department Ujjain (Bhopal Zone) M.P. Father in private sector. Mother housewife. Preferred Government job in Madhya Pradesh/Chhatisgarh. Avoid Gotras: Kandola, Nain, Dalal. Contact: 9416339570
- SM4 Jat Boy (DOB 18.05.96) 29/5'10" B. Tech. PDM Bahadurgarh. Master (Finance) from Germany. Working as Equality Analyst in New Delhi MNC, Headquarter in London (U.K.) Package Rs. 18 LPA. Avoid Gotras: Dalal, Kadyan, Dahiya. Contact: 8708370617, 9416823236
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.97) 28/5'8" B.Com. Assistant Manager in IDBI Bank. Avoid Gotras: Sangwan, Kaswa, Jangu. Contact: 9068574655
- SM4 Jat Boy (DOB 10.07.89) 35/5'10" B. Tech. Civil Engineering. Sub Inspector in Delhi Police. Father expired. Mother Officer retired. Family settled in Mohali. Avoid Gotras: Beniwal, Brar, Nain. Contact: 9877086741
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 26/ B.Com. Diploma in Computer Hatron. Own business of mobile repair. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Dalal, Kadyan. Contact: 8146229865, 9877552019
- SM4 Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'9.5" MA. (GEO) from PU. B.Ed. Employed as Office Suptd. in Indian Railways, Rs. 7-8 LPA. Father lecturer retired. Mother ex-teacher. Family settled in Ambala with shop in Ambala Cantt. Avoid Gotras: Gill, Billing, Bilam. Contact: 9417064917
- SM4 Jat Boy (DOB 03.04.2000) 25/5'10" M. Tech. in Electrical from PEC Chandigarh. A.M. in Central Bank of India. Father Principal SRM Polytechnic Naraingarh. Mother in Haryana Government. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Kadyan, Nehra. Contact: 8398960130
- SM4 Jat Boy (DOB 16.02.94) 32/5'9" B. Tech. in Computer Science & Engineering from Kurukshetra University. Officer in Hry Govt, selected by HPSC. Father Retired Lt. Colonel. Family settled at Ambala City. Avoid Gotras: Sandhu, Mahla, Sindhur. Contact: 9466442353
- SM4 Jat Boy (DOB 14.06.93) 32/5'7" B. Tech. SR CRA in Noida Metro Rail. Income Rs. 68K /month. Father retired from DTC. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Balhara, Phogat. Contact: 9671377166
- SM4 Jat Boy (DOB 09.06.2000) 25/ 6feet. Employed in Navy. Salary Rs. 15 lac Per year. 27 acre agriculture land, three plots, six shops. Avoid Gotras: Beniwal, Dhaka, Dhanda. Contact: 9813130081, 7027100015
- SM4 Jat Boy (DOB 30.01.98) 28/5'9" M.A. Geography, NET qualified, Employed in Haryana Police. Father MPHW (M) in Health Department. Mother housewife. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Nehra, Dhull, Duhan. Contact: 8685839986, 9992096462
- SM4 Jat Boy (DOB 27.06.96) 29/5'8" Master in C.S. from University of Waterloo, Canada. B. Tech. C. S. from GNDEC Ludhiana. Working in I.T. MNC in Toronto, Canada. (Canadian PR). Salary S60000 CAD. Father working as GM (Engineering). Preferred working professional in Canada. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Contact: 9814622289
- SM4 Jat Boy (DOB 22.06.88) 37/5'10" MBA in Marketing & B. Tech. in ECE. Working in a reputed Company EY. Salary Rs. 45 LPA. Father working as GM (Engineering) in reputed Company. Mother housewife. Avoid Gotras: Kaswan, Panwar. Contact: 9814622289
- SM4 Jat Boy (DOB 02.05.98) 27/6'3" B. A. P.U., Global Business Management from Waterloo, Canada. Working as Correction Officer, Government of Ontario, Canada. Package 80K Canadian dollars PA. Father Inspector in CISF. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Kundu, Dhanda, Bhoker. Contact: 7696873937
- SM4 Jat Boy (DOB 19.05.91) 34/5'9" Diploma and Degree in Electrical Engineering. Own business. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Nandal. Contact: 9417005229, 9872344990
- SM4 Jat Boy (DOB 19.05.96) 28 MBBS from PGI Rohtak. Father expired, retired from Army. Mother pensioner. Preferred MBBS girl. Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga, Dhull. Contact: 9468407521
- SM4 Jat Boy (DOB 10.12.99) 26/5'11" B. Tech. Computer Science from C.U., Self Business of Study Immigration at Chandigarh. Income Rs. one lakh per month. Parents both in Government Job. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Panwar. Contact: 9501005215, 9463187897
- SM4 Jat Boy (DOB 15.11. 95) 30/6feet B. Tech, CSE. Working as Senior Manager at Navartis Hyderabad. Total experience 7.5 years. Income Rs. 50-60 lakh per year. Father retired from Air Force. Mother home maker. Avoid Gotras: Lakra, Malik, Maan. Contact: 7989389447
- SM4 Jat Boy (DOB 21.02. 2000) 25/6'1" B. Tech. Civil engineering from PEC. Gold Medalist & President Awardee (2022 Batch) Employed in Central Government PSU Officer, Delhi/Gurugram. Father Asst. S.I. in Chandigarh Police. Mother home maker. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Hooda, Dahiya, Gahlawat. Contact: 9417937113
- SM4 Jat Boy (DOB 25.08.96) 29/5'9" B. Tech, MA. Officer in Government bank. Father retired Sub-Inspector from Haryana Roadways. Mother housewife. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Bamel, Narwal, Punia. Contact: 9467645319, 7696322587
- SM4 Jat Boy (DOB 10.12. 95) 30/5'10" B.Tech. Self employed in Chandigarh. Father retired Inspector from Chandigarh Police. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Lochab, Hooda, Dhankar. Contact: 8146991568
- SM4 Jat Boy (DOB 12.09.97) 28/5'7" B. Tech (CSE) LPU Jalandhar. I.T. Sector Hyderabad. Salary Rs. 27.30. LPA. Father Assist Director in Khadi & Village Industry at Ambala Cantt. Mother housewife. Avoid Gotras: Hooda, Ahlawat, Siwach. Contact: 8360153519, 7696046215.

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

जैसा कि आपको विदित है कि जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान, कटरा–जम्मु में 10 कनाल भूस्थल पर दीनबंधु चौ० छोटूराम यात्री निवास के नाम से एक विशाल बहुमंजलीय भवन का निर्माण किया जायेगा। यात्री निवास के निर्माण, विस्तार व रख–रखाव आदि पर वर्ष 2019 से अब तक लगभग 2,36,52000 (दो करोड़ छतीस लाख बावन हजार) रुपये की राशि खर्च हो चुकी है और लगभग 63,50,000 (तरेसठ लाख पचास हजार) रुपये अनुदान के तौर पर प्राप्त हुये। आप सब के सहयोग से यात्री निवास स्थल पर इस समय शौचालय व बाथरूम सहित पांच वातानुकुलित डबल बैड कमरों व 15 बैड की डोरमैट्री का निर्माण किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिये भोजन की व्यवस्था हेतू कैन्टीन का निर्माण कर दिया गया है। इसके अलावा बिजली, पानी की उचित व्यवस्था के लिये 11 के.वी. ट्रास्फॉर्मर व सबमर्सिबल ट्यूबवेल लगा दिया गया।

इस प्रस्तावित यात्री भवन के निर्माण में कुछ स्थानीय प्रशासनिक व भूगोलिक तकनीकी दिक्कते आ रही है। इसलिये बुहमंजलीय भवन का निर्माण कार्य प्रशासन की स्वीकृति मिलते ही शुरू कर दिया जायेगा और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप सभी के सहयोग व माता वैष्णों देवी की कृपा से इस विशाल प्रोजेक्ट का निर्माण अवश्य पूरा होगा।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। इसके अलावा भवन निर्माण हेतू 11,000 रुपये या अधिक राशि देने वाले सभी दानी सज्जनों का अनुदान बोर्ड यात्री निवास परिसर में शीघ्र लगाया जा रहा है। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)

सह–सम्पादक : डा० राजवन्तीमान

साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक

प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798

वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़

फोन : **0172-5086180, M-9877149580**

Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला

फोन : 0172–2590870,M-9467763337

Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू M-9320693332

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।